मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

ताक़त का नशा

इस्लामी सज़ाएं ......

क़ुरआन के अवतरण का उद्देश्य

यूरोप इस्लाम का विरोधी क्यों?

मुसलमानों का मान सम्मान

नमाज़ के आदाब ....

क़ुरआन करीम का शैक्षिक रूप

पश्चिम की इस्लाम दुश्मनी

FEB 16

₹ 10/-

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

कुरआन मजीद का सबसे बड़ा चमत्कार इस्लाम है

"कुरआन मजीद ने दुनिया में धर्म व आस्था का अन्तिम हिदायतनामा (आदेशपत्र) प्रस्तुत किया है, जिससे अधिक स्थिर और स्पष्ट धार्मिक हिदायतनामा दुनिया में आजतक नहीं आया। इससे पहले के धर्म भी (क्योंकि वे अपने अपने समय के लिए थे) इसलिए इसकी तुलना में अयोग्य हैं और क्योंकि आसमान की आख़िरी किताब ज़मीन पर आ चुकी है, इसलिए यह आख़िरी हिदायतनामा है। इससे अधिक मनुष्य को अपने सृष्टा से जोड़ने वाला और उसके जीवन में लिल्लाहियत और आत्मिकता भरने वाला, उन सभी गुमराहियों और गुनाहों से दूर रखने वाला, जिसमें धार्मिक समुदाय पड़े थे और पड़े हैं, कोई हिदायतनामा इनसान के समक्ष नहीं आ सकता है। इसी तरह इनसान के इस जीवन के लिए एक आकाशीय, व्यवहारिक व सांस्कारिक नियम दिए जो दुनिया में बेहतरीन व्यवहारिक व सामूहिक परिणाम पैदा करने के ज़िम्मेदार हैं और उसने पैदा करके दिखाए जो किसी और तरीक़े पर आज तक अस्तित्व में नहीं आए। वह मानव समाज की सभी मुश्किलों को जो आज तक पेश आयीं या क़यामत तक पेश आ सकती हैं अपने चमत्कारी रूप से ज़रा–ज़रा से इशारे से हल कर देता है। वह ऐसे नियम देता है जिसके आधार पर हर युग में संसार का बेहतरीन समाज स्थापित किया जा सकता है और हर जगह नये मानव समाज का निर्माण हो सकता है। चूंकि वह सृष्टा है इसलिए सभी इनसानी ग़लतियों, क़ानून बनाने की कमियों और अनुमानों से पवित्र हैं। वह चूंकि आख़िरी है इसलिए हर प्रकार की बढ़ोत्तरी व पूर्ति से परे है। वह चूंकि व्यापक है इसलिए हर क़ौमी व स्थानीय विशेषताओं से अधिक प्रकाशवान है। वह चूंकि स्थायी है इसलिए हर प्रकार के बदलाव से आज़ाद है। वह चूंकि सम्पूर्ण है इसलिए उसके लिए किसी प्रकार की बढ़ोत्तरी की आवश्यकता नहीं।

इसको लागू करने की हालत में वे समस्यांए सामने ही नहीं आती जिन्होंने हज़ारों सालों से चिन्तकों व बुद्धिजीवी वर्ग के दिमाग़ को व्यस्त कर रखा है और जिनका आख़िरी हल कभी भी पेश नहीं हुआ और कितनी सामाजिक व राजनीतिक समस्यांए हैं जो उस माहौल में पैदा नहीं होती। हज़ारों बरस की ग़लतियों और अनुभव के बाद दुनिया के चिन्तक जिस नतीजे पर पहुंचे हैं, कुरआन ने तेरह सौ बरस पहले एक उम्मी (जो प्रत्यक्ष रूप से पढ़ा–लिखा न हो) की ज़बान से यह बयान करवा दिया। यह हिदायत नामा और यह दस्तूर जिसका नाम इस्लाम है, ख़ुदा की कारीगरी और तत्वदर्शिता का श्रेष्ठ नमूना है।

और चूंकि इस इस्लाम के नियम कुरआन से लिये गए हैं और कुरआन ही ने उनको दुनिया के सामने पेश किया, इसलिए यह उसी को प्रस्तुत किया हुआ एक चमत्कार है।

कुरआन के इस चमत्कार की व्याख्या और उसके सम्मान के कारकों को प्रकट करना अस्ल में इस्लाम की पूरी व्याख्या है जिसके लिए लाइब्रेरियां भी पर्याप्त नहीं। उनमें से बहुत सी चीज़ें अपने–अपने स्थानों पर भी आएंगी। आस्था के अध्याय में उसके अक़ीदे की मोजिज़ाना साख़्त और उनकी मोजिज़ाना पूर्ति, अख़लाक़ व मुआशिरत के ज़िम्न में कुरआन की चमत्कारी व्यापकता व हिकमत पर ग़ौर करने की ज़रूरत है। उन बिन्दुओं की गणना और उसकी विशेषताओं की गणना किसी इनसान से किसी ज़माने में भी मुमकिन नहीं।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:२ फरवरी २०१६ ई० वर्ष:७

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष – दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सह सम्पादक
मौ० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नारवुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुदक
मौ० हसन नदवी

अनुवादक
मोहम्मद सैफ़

E-Mail: markazulimam@gmail.com

www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

ताक़त त का नशा..२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

इस्लामी सज़ाएं और उनका महत्व......................३
मौलाना सैय्यद मुहम्मदुल हसनी रह०

कुरआन करीम क्यों नाज़िल हुआ.......................४
हज़रत मौलना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

यूरोप इस्लाम का विरोधी क्यों..........................६
मौलना सैय्यद मुहम्मद वाज़ेह हसनी नदवी

मुसलमानों का मान सम्मान.............................८
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

मुहम्मदी जीवन (स०अ०)................................१०
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

नमाज़ के आदाब व सवाब की चीज़ें.............१२
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

क़यामत की निशानियां...................................१५
मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

कुरआन करीम का शैक्षिक रूप........................१६
अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

तिलावत–ए–कुरआन के कुछ नमूने................१९

पश्चिम की इस्लाम दुश्मनी...........................२०
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

सम्पादक: बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली, यू०पी० 229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण, मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

प्रति अंक 10रू

वार्षिक 100रू०

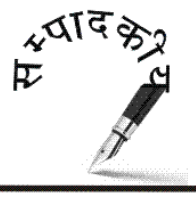

सम्पादकीय

ताक़त का नशा

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

पूरी दुनिया इस समय जिस मतभेद का शिकार है ऐसा प्रतीत होता है कि वह बारूद के ढ़ेर पर खड़ी है और किसी भी समय एक चिंगारी उसका काम तमाम कर देने के लिए पर्याप्त है, और यह सब कुछ इनसानों ने अपने हाथों से किया है। हर ताक़त वाला अपनी ताक़त के नशे मे चूर है। उनको न मनुष्य की चिंता है न मानवता की। उस पर केवल अपनी ताक़त बढ़ाने का नशा सवार है और यदि कोई दूसरा अपनी ताक़त बढ़ाने के लिए एक क़दम आगे बढ़ता है तो हर दूसरा उसको कुचलना अपना महत्वपूर्ण कर्तव्य समझता है। इस रस्साकशी का परिणाम यह है कि दुनिया नर्क बनती जा रही है। सृष्टा ने जिसको मनुष्य के लिए स्वर्ग समान बनाया था और उसकी नेमतें मनुष्य के लिए पैदा की थीं, मनुष्य अपने हाथों से उनको बर्बाद करने पर तुला हुआ है। ताक़त के नाम पर जो प्रदर्शन हो रहे हैं उसका असर ख़ुश्क़ी और तरी (धरती और समुद्र) पर पड़ रहा है। अल्लाह तआला कहता है: "लोगों के हाथों की कमाई है कि ख़ुश्की और तरी में बिगाड़ अर्थात करप्शन फैल रहा है।"

यह करप्शन दो प्रकार का है। एक तो मनुष्य के बीच में यह करप्शन फैल रहा है और दूसरा बिगाड़ वह है जिसका संबंध सांसारिक व्यवस्था से है, और हर व्यक्ति उसको स्वीकार करने पर विवश है, किन्तु कोई भी उसके सुधार की ओर क़दम बढ़ाना नहीं चाहता।

हम मनुष्यों के कुकर्म भी दो प्रकार के हैं, एक प्रकार वह है जिसका संबंध निजी जीवन से है, उसका भी प्रभाव सांसारिक व्यवस्था पर पड़ता है। यदि कोई यह समझता है कि यह हमारा निजी मामला है तो यह उसकी भूल है। अल्लाह तआला ने जिस प्रकार वस्तुओं में विशेषताएं रखी हैं, उसी प्रकार कर्म में विशेषताएं रखी हैं। हर कर्म का एक प्रभाव पड़ता है, जो कभी–कभी तुरन्त नज़र आता है परन्तु अधिकतर नज़र नहीं आता, दूसरे प्रकार के कुकर्म वे हैं जो सामूहिक होते हैं। ये और अधिक गंभीर व भयावह हैं। समाज के बिगाड़ में इसका प्रभाव अधिक पड़ता है और इसमें भी अधिकांश ऐसी छूत वाली बीमारियां होती हैं जो पूरी व्यवस्था को भ्रष्ट कर देती हैं। और इसमें इनसान अपनी ताक़त के नशे में चूर हो जाता है और उसके परिणाम में फिर कभी–कभी ऐसी तकनीक अपनाता है जो संसार की व्यवस्था पर प्रभाव डालती है और बाह्य रूप से भी दुनिया की व्यवस्था इससे प्रभावित होने लगती है।

एटमी अविष्कार ने जिस प्रकार संसार को प्रभावित किया और संसार के हर क्षेत्र पर उसने असर डाला है। न कोई महाद्वीप उससे सुरक्षित है, और न कोई समन्दरी क्षेत्र। यह भी "लोगों के हाथों की कमाई है कि ख़ुश्की और तरी में बिगाड़ फैल गया है" का चरितार्थ है।

क़यामत से पहले इनसान अपने ऊपर क़यामत बरपा करने पर उतारू है। और उसका मूलभूत कारण अत्यधिक स्वार्थ और उसके नतीजे में ज़ुल्म व अत्याचार का वह स्वभाव है जिसका जनसाधारण को सामना करना पड़ रहा है। यह स्थिति पूरी दुनिया के लिए बहुत ही गंभीर है और यदि इसको रोकने की कोशिशें न की गयीं तो इस बात का डर है कि फिर बात वहां तक पहुंच जाए कि वापसी के रास्ते बन्द हो जाएं।

इसका इलाज केवल यही है कि अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने मानवता का जो पाठ पढ़ाया था और जो व्यवहारिक मूल्य मनुष्यों को दिए थे उनको अपनाया जाए और दुनिया को उसकी रोशनी में लाने की कोशिश की जाए। अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (स0अ0) के आने का उद्देश्य ही यही बताया कि: "और हमने आपको तमाम जहानों के लिए रहमत बनाकर भेजा है।" और उनके बारे में गवाही दी कि: "और निसंदेह आप व्यवहार के श्रेष्ठ स्थान पर हैं।" और स्वयं रसूलुल्लाह (स0अ0) ने अपने आने का यही उद्देश्य बताया कि: "मैं व्यवहार की पराकाष्ठा की पूर्ति के लिए भेजा गया हूं।"

इसके लिए दावत देने वाले समुदाय को स्वयं अपनी व्यवस्था ठीक करनी होगी और रसूलुल्लाह (स0अ0) के जीवन के व्यवहारिक मूल्यों को अपने जीवन में लाना होगा ताकि इसका अमली नमूना दुनिया के सामने आ सके और दुनिया अपनी अस्ल मंज़िल को पा सके।

इस्लामी सज़ाएं और उनका महत्व

मौलाना सैय्यद मुहम्मदुल हसनी (रह०)

"फिर हमने उसको एक सीख देने वाली घटना बना दिया, उन लोगों के लिए जो उस क़ौम के समकालीन थे, और उन लोगों के लिए जो बाद के ज़माने में आते रहे, कारण बना दिया खुदा से डरने वालों के लिए।"

यह आयत सूरा बक़रा की है और इसमें बनी इस्राईल की एक बहुत सख़्त सज़ा के वर्णन के तुरन्त बाद इन सज़ाओं की तत्वदर्शिता (हिकमत) यह बतायी गयी कि इससे दूसरे लोगों और आने वाली नस्लों को ऐसी नसीहत (सीख) मिले और उन पर इतना ज्यादा डर पैदा हो जाए कि फिर किसी हाथ को वह काम करने का साहस न हो और जिस के दिल में खुदा का डर हो व खुदा का लिहाज़ हो उनको भी इससे सबक़ प्राप्त हो। यानि एक ओर मुजरिमों और ज़ालिमों का साहस इन सज़ाओं के कारण इतना कम हो जाए कि वह फिर किसी जुर्म का साहस न करें और दूसरी ओर ईमान वाले और सयंम बरतने वालों को ऐसी नसीहत व सबक़ प्राप्त हो कि इनके दिल में जुर्म व गुनाह का ख्याल भी न आये।

जुर्म व दण्ड के आपसी सम्बन्धों पर आजकल दुनिया में बड़ा ज़ोर दिया जाता है और इस्लामी सज़ाओं को बहुत अधिक बेरहम व अत्याचारी कहा जाता है। लेकिन इस्लाम ने जुर्म व सज़ा का जो विचार प्रस्तुत किया है आज तक किसी व्यवस्था ने प्रस्तुत नहीं किया है। साफ़ है कि मनुष्य और ब्रह्माण्ड को बनाने वाले ने जो सज़ा उसके लिए रखी है और फिर उसकी जो हिकमत है, इसके सम्मुख खुद मानवजाति की बनाई हुई सज़ा की क्या हैसियत हो सकती है? यह इनसान की नादानी है कि वह अपनी बनाई हुई सज़ाओं को (जिन को वह बार–बार बदलता है) अपने पैदा करने वाले और वास्तविक उपासक की रखी गई सज़ाओं से बेहतर समझता है। इन सज़ाओं की खुली हुई यह बरकत जाहिर होती है कि कुछ सज़ाओं के बाद ही समाज में एक खुशगवार बदलाव पैदा होने लगता है और अगर इनका सरलता व दृढ़ता से अमल किया जाता रहे तो पूरा समाज सुखमय व शान्तिमय हो जाता है। इसके ईमान से भरी घटनाओं और नमूनों से पूरा इस्लामी इतिहास भरा पड़ा हुआ है और कोई इसे झुठला नहीं सकता है।

इन सज़ाओं की एक अजीब विशेषता व बरकत यह है कि बहुत सी कमज़ोरियों और कमियों के साथ भी इसके असर दिखाई देतें हैं। इसकी एक बहुत स्पष्ट मिसाल सऊदी अरब की है। सऊदी अरब के समाज को इस्लामी समाज नहीं कहा जा सकता लेकिन इसके बावजूद आज वहां कम से कम जुर्म का प्रतिशत इतना घट चुका है कि इसका किसी दूसरे देश में कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इस के विपरीत अमरीका जो स्वयं को संस्कार व संस्कृति का इमाम और पेशवा समझता है, इस समय जुर्म का सबसे बड़ा केन्द्र है। इससे यह साबित होता है कि हमें आडियल सोसाइटी और समाज की प्रतीक्षा में नहीं रहना चाहिए बल्कि जुर्म व गुनाह के प्रेरकों व कारणों को खत्म करना बहुत आवश्यक है। ऐसा न हुआ तो एक तरफ हमारी मीडिया, प्रचार व प्रसार द्वारा गुनाह की दावत देते हों और हमारे स्कूल व विद्यालय दिमाग़ी पथभ्रष्टता का सामान उपलब्ध कराती हों। दूसरी तरफ यह कहा जाता है कि खबरदार! दामन गुनाह में लिप्त न होने पाये अगर एक हाथ कटने या टूटने से सैकड़ों, हज़ारों हाथ कटने और टूटने से बच जाते हैं, एक फांसी से सैकड़ों जाने हलाकत और न जाने कितने स्तीवत्वहरण से बच जाते हैं तो इन सज़ाओं को अत्याचार नहीं, रहम कहा जाएगा।

इसके अलावा इन सज़ाओं को शरीअते इस्लामी ने इतने नियमों और क़ैद और इतनी गवाहियों और ऐसे तरीक़े से सुरक्षित कर दिया है जिससे अन्याय और अत्याचार का अस्तित्व ही सम्भव नहीं। केवल एक चीज़, कज़्फ (यानि किसी पर गुनाह या ग़लत आरोप लगाना) और इसकी सज़ा एक ऐसी परिधि है जिस को आसानी से कोई पार करने का साहस नहीं कर सकता है।

दूसरे अवसर पर यह शिक्षा भी दी है की मजबूरियों के लिए, जो ये सज़ा पायें, हमारे दिल में नर्मी और रहम का कोई भाव न पैदा होना चाहिए, इसलिए की मामला अल्लाह तआला के दीन व इसके बताये गये तरीक़े का है।

"चोर और चोरनी दोनों के हाथ काट दो, बदला इसका जो इन्होने किया है, अल्लाह तआला ग़ालिब (अधिपत्य) और हिकमत वाला (तत्वदर्शी) है।"

सूरह नूर में कुरान की सज़ाओं के लिए आता है कि: "तुम्हारे अन्दर इन दोनों के लिए नर्मी और रहम का कोई भाव पैदा न हो अगर तुम्हारा अल्लाह और आखिरत पर ईमान है।"

कुरआन करीम क्यों नाज़िल हुआ

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

कुरआन मजीद से संबंध होना एक नेमत है और अल्लाह तआला की इस नेमत से फ़ायदा उठाना एक अच्छी बात है। इसलिए कि कुरआन मजीद अल्लाह का कलाम (ईशवाणी) है और प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह का कलाम होने की वजह से उसकी ताक़त, उसकी विशेषता, उसका प्रभाव अत्यधिक है। इसका असर ऐसा है कि अगर यह सही असर के साथ संसार में प्रकट हो जाए तो दुनिया उसको बर्दाश्त नहीं कर सकती है। अल्लाह तआला ने इस बात को कई तरह के उदाहरणों से बताया, एक जगह बताया गया कि हमने इस कलाम को पहाड़ों पर उतारा होता तो पहाड़ इसका बोझ उठा नहीं सकते थे, बल्कि वे फट जाते, जल जाते, इसीलिए कुरआन मजीद में हज़रत मूसा अलै0 का उदाहरण भी दिया गया कि उन्होंने ईशप्रकाश की मांग की "ऐ परवरदिगार! हम आपको देखना चाहते हैं" तो कहा गयाः "हमारे प्रकाश को पहाड़ बर्दाश्त नहीं कर सकता, अगर कर लेगा तो तुम भी देख सकते हो" लेकिन जब ज़रा सा ईशप्रकाश आया तो तूर पहाड़ जल कर उस प्रकार बैठ गया जैसे उसको किसी ने दबा दिया हो और हज़रत मूसा अलै0 भी बेहोश हो गए और इस प्रकाश को न देख सके। तो यह किताब (आसमानी किताब) है, और यह ज़मीन आसमान नहीं है, ज़मीन ज़मीन है, आसमान आसमान है, इसीलिए आसमान को यह ज़मीन बर्दाश्त नहीं कर सकती, आसमान की जो ताक़त और वज़न है उसके सामने यह ज़मीन कोई हैसियत नहीं रखती, ज़मीन की हैसियत सूरज के सामने कुछ नहीं है, सूरज अपने फ़ासले से भी ज़मीन को तपा देता है और ज़मीन इसी के चारों ओर चक्कर काट रही है, वह भाग नहीं पाती, सूरज से बड़ी चीज़ भी आसमान की ताक़त के सामने कोई हैसियत नहीं रखती, इसलिए विचार करने योग्य बात यह है कि अल्लाह का कलाम जो एक प्रकाश व नूर की हैसियत रखता है इस ज़मीन पर कैसे आ सकता है? लेकिन उस अल्लाह तआला ने इनसानों पर यह करम फ़रमाया कि उनकी हिदायत और मार्गदर्शन के लिए अपने कलाम को ज़मीन पर भेजा और वह व्यवस्था कर दी जिसके कारण से यह कलाम ज़मीन पर रह सके और लोग इसको पढ़ सकें, वरना यह कलाम यदि अपनी इसी ताक़त के साथ हो यानि उस कैफ़ियत के साथ हो जो उसकी वास्तविक स्थिति है तो उसको आदमी अपनी ज़बान से अदा नहीं कर सकेगा और उसको सुन नहीं सकेगा, कान बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे, बल्कि उसका नूर असर डालेगा, इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि "अगर हम इसको पहाड़ों पर नाज़िल करते तो पहाड़ फट जाते, लेकिन इनसान के लिए हमने उसको उतार दिया, ताकि इनसान उससे फ़ायदा उठाएं" और इनसान के फ़ायदे के लिए अल्लाह ने उस चीज़ को ऐसा कर दिया है कि यहां ज़मीन पर वह रह सके, और उसकी मिसाल ऐसी है जैसे बिजली का करेन्ट होता है जो तार से गुज़रता है उसके ऊपर रबड़ चढ़ी होती है, अगर उसको कोई पकड़ ले, उसको इस्तेमाल करे, तो उससे रोशनी हासिल होगी, उससे इंजन चलाया जा सकता है, लेकिन अगर कोई उसी खुले तार को छू ले तो उस करेन्ट के लगने से ज़िन्दा नहीं बचेगा और अगर इनसान वही करेन्ट अप्रत्यक्ष रूप से छूता है तो उसको बर्दाश्त कर लेता है। इसी तरह कुरआन मजीद का उदाहरण है कि अल्लाह तआला ने इस कलाम (ईशवाणी) को ऐसा आत्मिक खोल प्रदान किया है कि यह हमारे कानों में जाता है, हमारे मुंह से भी अदा होता है, इसको हम क़ाग़ज़ पर भी ले लेते हैं, इसको उठाते हैं, वरना यदि यह ग़िलाफ़ इसमें इस तरह न हो जिस तरह अल्लाह तआला ने हमारे फ़ायदे के लिए इसको रखा है, तो यह कलाम इस दुनिया में उतर नहीं सकता, दुनिया उसको झेल नहीं सकती, बल्कि दुनिया फट जाएगी, टूट जाएगी, मानो यह अल्लाह का ऐसा करम है कि वह चीज़ जिसको हम बर्दाश्त नहीं कर सकते वह हमको दी, जो चीज़ यहां रह नहीं सकती थी अल्लाह ने उसको उतारा, ताकि हम उससे फ़ायदा उठाएं, तो इतनी बड़ी दौलत व नेमत अल्लाह ने हमको दी है जो हमको सामान्य अवस्था में नहीं मिल सकती थी अतः उसका सम्मान करने की आवश्यकता है। मनुष्य उसका जितना सम्मान करे वह कम है।

कुरआन मजीद का सम्मान यह है किः "शायद वे समझ सकें, विचार कर सकें।" यानि बन्दे यह समझ सकें कि अल्लाह तआला का स्थान क्या है? और अल्लाह तआला के

सामने बन्दों की क्या हैसियत है, और उन पर क्या ज़िम्मेदारी आती है? कुरआन मजीद में अल्लाह तआला इनसानों को ध्यान दिलात है कि तुम्हें कैसा जीवन बिताना चाहिए? तुम्हारे कर्म कैसे होने चाहिए? तुम्हारा क्या तरीक़ा होना चाहिए? तुम्हारे दिल के अन्दर क्या कैफ़ियत होनी चाहिए? इसलिए कि अल्लाह तआला ने इनसानों पर बहुत अधिक उपकार किए हैं। यह संसार हमारे लिए बनाया, हमारे लिए ही सूरज का निर्माण किया, चांद को हमारे लिए लाभदायक बनाया, इसी तरह ज़मीन में जो कुछ होता है और पाया जाता है वह सब अल्लाह ने हमारे फ़ायदे के लिए ही रखा है कि हम उससे फ़ायदा उठाएं। संक्षेप में यह कि हर प्रकार के उपकार जिनकी हमको जीवन में आवश्यकता होती है, वह सब अल्लाह ने हमको उपलब्ध करा दीं। इसीलिए इन सब चीज़ों को देने के बाद वह चाहता है कि बन्दे उसकी बात को माने और अपने परवरदिगार के सामने अपने को बन्दा बना कर रखें, अपने परवरदिगार का मुक़ाबला न करने लगें, यानि अपने को अपने परवरदिगार के बराबर न समझने लगें। वह इस प्रकार कि अपने इच्छानुसार कर्म करें, अल्लाह के आदेशों को अनदेखा कर दें या जिस प्रकार अपने साथी के साथ रवैया होता है उसी प्रकार रवैया अल्लाह तआला के साथ करें कि वह जो चाहता है कि करता है अल्लाह तआला जो कह रहा है वह नहीं करता यानि अपने को अल्लाह तआला के बराबर समझ रहा है या किसी और को अल्लाह तआला के बराबर समझ रहा है यह काम अल्लाह के निकट बहुत ही अप्रिय है। क्योंकि अल्लाह ही ने उसको सबकुछ दिया है यहां तक कि अपना कलाम उतार दिया जो कि उतर नहीं सकता था लेकिन अल्लाह ने उसको इसीलिए उतारा ताकि हम उससे सही राह पर आ सकें, इसलिए इस कलाम यानि कुरआन के मूल्य को समझना चाहिए और इसको जो अदब व स्थान है उस स्थान का सम्मान जैसा करना चाहिए वैसा ही आवश्यक है।

कुरआन मजीद का पहला अदब यह है जिसको ख़ुद कुरआन मजीद में ही बयान किया गया है: "इसको नहीं छूते मगर वे लोग जो पाकीज़ा होते हैं।" यूं तो इनसान पूर्ण रूप से पवित्र हो ही नहीं सकता इसलिए कि न जाने उसके पेट में न जाने क्या–क्या भरा हुआ है, लेकिन ज़ाहिरी तौर पर अल्लाह ने ऐसा तरीक़ा बताया कि यदि उसे अपना लिया जाए तो इनसान को पाक समझा जाएगा। अब हर इनसान की यह ज़िम्मेदारी होती है कि वह पाकी के तरीक़े को अपनाने के बाद अल्लाह का पाक कलाम पढ़े और अल्लाह का यह एहसान समझे कि उसने इस योग्य बना दिया कि एक नापाक इनसान अल्लाह के पाक कलाम से फ़ायदा उठा रहा है। उसी के साथ–साथ उसके सम्मान में भी किसी प्रकार की कोई कोताही न करे। कुरआन मजीद की क़दर जैसी हम कर सकते हैं हमको करनी चाहिए और इसके लिए जो बाते बतायी गयी हैं उनसे हमारे जीवन का जो मार्गदर्शन होता है उस मार्गदर्शन से हमको लाभ उठाना चाहिए, ऐसा करने से अल्लाह तआला ख़ुश होता है क्योंकि इस कलाम के उतारे जाने का उद्देश्य ही यही था कि हम उससे फ़ायदा उठाएं और अपनी ज़िन्दगी को उससे संवारे, जब ऐसा करेंगे तो यह बात अल्लाह तआला की मर्ज़ी के अनुसार होगी और अल्लाह तआला को पसंद आएगी कि उसका बन्दा उसका कहा मान रहा है। उसके कहने पर चल रहा है। उसने जो हिदायत दी है उसको मान रहा है।

इतने वास्तो से कुरआन मजीद को केवल हमारे फ़ायदे के लिए उतारा गया ताकि हम उससे नसीहत प्राप्त करें। अपनी ज़िन्दगी को बनाएं और संवारें। क्योंकि अल्लाह के आदेशानुसार जीवन व्यतीत करने पर हम सही जीवन व्यतीत करने वाले होंगे और उसका परिणाम यह होगा कि हमको आसमानी ताक़त हासिल होगी जो कि हमें आख़िरत की ज़िन्दगी में काम देगी। हदीस शरीफ़ में आता है कि हमारा कोई काम ऐसा है कि जिससे वहां (जन्नत में) बाग़ लग जाता है। हमारा कोई काम ऐसा है जिससे वहां नहरें जारी होती हैं। हमारा कोई काम ऐसा है जिससे वहां महल बन जाते हैं। ज़ाहिर है कि हमें वहां उस तरह की कोई चीज़ मिलेगी वह हमारे लिए इस काम की वहज से मिलेगी? इससे मुराद वही कर्म है जिसको कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने अपने नबियों और अपने कलाम के द्वारा हमको बता दिया कि तुम यह करोगे तो तुमको फ़ायदा होगा, न ही कोई ऐसी चीज़ है जिससे तुम फ़ायदा उठा सकते हो, जैसे पत्थर होता है उस पर आप खड़े रहिये तो आपको न साया मिलेगा, न ही आपको राहत मिलेगी। इसी तरह वहां की व्यवस्था मिट्टी वाली व्यवस्था नहीं है, बल्कि वहां की व्यवस्था आत्मिक है जो कि हमारे कर्म के परिणाम में प्रकट होगी, यह सभी वे शिक्षाएं हैं जो अल्लाह तआला ने अपने नबियों के द्वारा मनुष्यों को बतायी हैं।

यूरोप इस्लाम का विरोधी क्यों?

मौलाना सैय्यद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

ग्यारहवीं सदी ईसवी में यूरोप में व्यक्तिगत और प्राइवेट तौर पर मुसलमानों के शिक्षण केन्द्रों लाभान्वित होने के रूझान पैदा हुए। उस समय यूरोप में शिक्षा पर पाबन्दी थी। रेने मार्सियल Rene Martial ने लिखा है कि बारहवीं सदी ईसवी में जब मुसलमानों के पास केवल स्पेन में सत्तर हज़ार लाइब्रेरियां थीं, यूरोप के बड़े–बड़े शहरों में एक किताब भी मिलनी मुश्किल थी।

एक पश्चिमी लेखक लिखता है: "ग्यारहवीं सदी ईसवी में जिस समय पश्चिम के बड़े–बड़े रईस और जागीरदारों अपनी हालत और अज्ञानता पर गर्व था, उस समय स्पेन में मुसलमानों के कुर्तुबा में एक महान लाइब्रेरी थी, जिसमें केवल हाथ की लिखी हुई साठ हज़ार किताबें थीं।"

एक दूसरा अंग्रेज़ लेखक कहता है: "इस्लामी स्पेन में उस समय घर–घर ज्ञान की चर्चा थी जबकि ईसाई दुनिया में कुछ लोगों को छोड़कर कोई लिखना–पढ़ना नहीं जानता था।"

डोज़ी क्वल लिखते हैं: "यूरोप में लोग जिहालत के अंधेरे में चक्कर काट रहे थे। उन्हें कहीं रोशनी नज़र नहीं आ रही थी। रोशनी केवल मुसलमानों की ओर से आ रही थी। ज्ञान व शिल्प, साहित्य, सिद्धान्त, कारीगरी और जीवन के दूसरे क्षेत्रों में मुस्लिम समुदाय मार्गदर्शन कर रहा था। बग़दाद, समरक़न्द, बसरा, दमिश्क़, क़ैरवान, मिस्र, ईरान, ग़रनाता और कुर्तुबा ज्ञान व शिक्षा के महान केन्द्र थे। इस्लामी साम्राज्य में छोटे–छोटे मदरसे और मस्जिदें भी बड़े–बड़े किताबघरों से जुड़ी हुईं थी जहां हर व्यक्ति को पढ़ने की स्वतन्त्रता थी जबकि यूरोप के केन्द्रीय शहर देहातों की तरह थे, जहां न तो ज्ञान था और न आबादी। यूरोप भौतिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शिक्षा हर प्रकार से बहुत पिछड़ा हुआ था।"

जर्मन प्राच्यविद (Orientalist) डॉक्टर ज़ेगरेड होन्कि अपनी किताब "पश्चिम पर इस्लाम का सूर्योदय हो रहा है" में लिखती हैं: "छः सदियों पहले पूरे यूरोप में केवल पेरिस के मेडिकल कॉलेज में एक छोटी सी लाइब्रेरी थी जिसमें केवल एक किताब थी और वह भी केवल अरबी लेखक की, यह बहुत मूल्यवान और जानकारी से परिपूर्ण थी। उस समय के सारे ईसाईयों के बादशाह लुई ग्यारहवें ने एक बार इस किताब को पढ़ने के लिए लेना चाहा तो उसे भी ज़मानत के तौर पर एक बड़ी रक़म जमा करनी पड़ी। लुई का उद्देश्य यह था कि उसके प्राइवेट डाक्टर इस किताब की एक नक़ल तैयार कर लें ताकि जब भी बादशाह को कोई बीमारी हो तो उससे सहायता ली जा सके। यह किताब क्या है एक महान इन्साइक्लोपीडिया है इसमें 1921ई0 तक के सभी पुराने यूनानी उपचार एकत्र कर दिए गए हैं।"

और लिखती हैं: "राज़ी ने मेडिकल साइंस और उपचार के विषय पर जो महान किताबें लिखी हैं वे यूरोप में (1498–1866 ई0) चालिस बार प्रकाशित हुईं। इसमें गठिया, पथरी, मूत्रथैली, गुर्दे और बच्चों की बीमारियों के बारे में चर्चा की गयी है और यह अपने विषय पर विश्वस्नीय स्त्रोत के समान है।"

और लिखती हैं: "अगर हम यह कहें तो इसमें कोई आश्चर्य और हैरत की बात नहीं कि यूरोप ने लगभग तीन सौ साल तक केवल अरबों की ही लिखी हुई किताबों और शोध पर विश्वास किया है।"

एक पश्चिमी चिन्तक कहता है: "अरब ही ग्रहों, विज्ञान, रसायन और उपचार के क्षेत्र में हमारे सबसे पहले अध्यापक हैं।"

मिस्यू लीटरी लिखती हैं: "यदि इतिहास में अरब पूर्ण रूप से नमूदार न होते तो ज्ञान व शिल्प और सभ्यता व संस्कृति में यूरोप की जागरुकता कई सदी और पीछे हो जाती।"

रेनान कहते हैं: "एलबर्ट कबीर हर चीज़ में इब्ने सीना का और सान्तूमा अपने सभी सिद्धान्तो में इब्ने रुश्द का एहसानमन्द है।"

"यूरोप के साइंस के पितामह रोजर बेकन भी अरबों के शिष्य थे और वह स्वयं अपने शिष्यों को कहते रहते थे कि यदि सही ज्ञान प्राप्त करना है तो अरबी पढ़ना सीखो।"

गोस्ताउ लीबान लिखते हैं: "अरबों ही ने यूरोप को शिक्षा व ज्ञान और सभ्यता व संस्कृति की दुनिया से परिचित कराया। अरब हमारे शुभचिन्तक थे और छः सदियों तक हमारे पेशवा रहे।

सलाहुद्दीन अय्यूबी के दूत ओसामा बिन मुनक़िज़ यूरोप के दौरे पर गए, उन्होनें एक व्यक्ति के आपरेशन की घटना अपने सफ़रनामें में लिखी है कि कुल्हाड़ी से उसका घुटना काटा जा रहा था।"

सोलहवीं सदी ईसवी तक यूरोप ज्ञान व संस्कृति में मुसलमानों से लाभान्वित होता रहा।

सलीबी जंग के दौरान यूरोप में इस्लाम और मुसलमान दुश्मनी का ऐसा ज़हर बोया गया कि वह हर यूरोपीय की रग–रग में भर गया।

ज्ञान व संस्कृति के क्षेत्र में मुसलमान यूरोप के पहले गुरू का स्थान रखते हैं। इसके बाद भी पश्चिम का हर नागरिक विशेषतयः ज्ञानी इस्लाम और मुसलमान के बारे में संदेह नहीं बल्कि दुश्मनी का ज़हन रखते हैं।

प्राच्यविदों ने ऐसा लिट्रेचर तैयार किया जिससे उनके दिमागों को ताक़त मिली कि मुसलमान उनके क्षेत्रों पर क़ाबिज़ हैं जो यूनान व रोम के अधीन थे।

इस्लाम के तेज़ी से फैलने और मुसलमानों के दुनिया भर में क़ाबिज़ होने से इस विचार में और बढ़ोत्तरी हुई और इससे एक प्रकार का डर पैदा हुआ। तुर्कों की ताक़त और यूरोपीय देशों पर उनका क़ब्ज़ा और उनपर नियन्त्रण न कर पाने के भाव व अनुभव ने इसमें बढ़ोत्तरी की।

अट्ठारहवीं और उन्नीसवीं सदी ईसवी में यूरोप के बहुत से देशों ने अपने शैक्षिक उन्नति से अपनी रक्षात्मक शक्ति बढ़ाई और अपनी जंगों का रुख़ इस्लाम की ओर मोड़ दिया।

उन्नीसवीं सदी में अधिकतर इस्लामी देशों पर यूरोप का नियन्त्रण हो गया और उन देशों में उन्होंने अपनी शिक्षा व्यवस्था और साहित्य को प्रचलित किया।

लारेंस ब्राउन Laurence Browne कहता है: "पहले हम यहूदी ख़तरे से डरते थे, लाल (जापान व चीन) ख़तरे से डरते थे और पूंजीवाद से डरते थे, लेकिन यह विचार ग़लत साबित हुआ। इसलिए कि यहूद हमारे दोस्त निकले, अतः उन पर अत्याचार करने वाला हमारा जानी दुश्मन होगा, फिर दूसरे युद्ध के दौरान पूंजीवादी हमारे समर्थक बने, रहा लाल ख़तरा (जापान, चीन) तो उससे निपटने के लिए बड़ी लोकतान्त्रिक शक्तियां पर्याप्त हैं, अब वास्तविक ख़तरा इस्लामी व्यवस्था और उसके एक व्यापक धर्म होने की हैसियत से एवं अपने पैरोकारों के क्षेत्र को अत्यन्त विशाल कर लेने की असाधारण क्षमता से है। मुसलमान ज़बरदस्त, आश्चर्यजनक जीवनदाता शक्ति के मालिक हैं। यूरोपीय साम्राज्य के रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट अकेले यही (इस्लाम) है।"

एक दूसरा पश्चिमी मार्गदर्शक कहता है, "मेरे ख़्याल से कम्यूनिज़्म यूरोप के लिए कोई ख़तरा नहीं, बल्कि वास्तविक ख़तरा इस्लाम से है, जो हमको प्रत्यक्ष रूप से चैलेंज कर रहा है। मुसलमान हमारी पश्चिमी दुनिया से अलग अपनी एक दुनिया रखते हैं। उनके पास विशुद्ध आत्मिक पूंजी है और वे एक वास्तविक, सच्चे और ऐतिहासिक सभ्यता व संस्कृति के मालिक हैं। मुसलमानों में इस बात की योग्यता है कि वे बिना किसी सहायता व सहयोग के एक नयी दुनिया की बुनियाद रख सकते हैं। मुसलमानों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु केवल उस कारोबारी व तकनीकी उन्नति की आवश्यकता है जो पश्चिम ने प्राप्त कर ली है।"

यूरोपीय लेखक इस्लाम के प्रचार का भय खड़ा करते रहते हैं। मुस्लिम समुदाय की योग्यताओं और उनके इतिहास से परिचित होने के कारण उनके अन्दर डर की भावना पायी जाती है बल्कि कमतर होने का भाव, इसके कारण वहां के ज़िम्मेदार ऐसे हालात पैदा करते हैं जिनसे पश्चिम के लोगों में इस्लाम से नफ़रत व दुश्मनी पैदा हो।"

इस्लाम और मुसलमान के इतिहास से परिचित होने और इस्लाम के दोबारा वर्चस्व में आने के भय ने यूरोप के बुद्धजीवियों व राजनीतिज्ञों के दिमाग़ में यह भावना पैदा कर दी है कि ऐसे साधन अपनाएं जाएं कि जिससे यह ख़तरा जिसका यूरोप ने एक हज़ार साल तक सामना किया है दोबारा वापिस न आए। इसमें ऐसे शैक्षिक, राजनीतिक एवं पूंजीवादी साधन अपनाए कि जिनके प्रभाव से मुसलमानों के ज़हन व ख़्याल से वर्चस्व का विचार समाप्त हो जाए।

एक वास्तविकता और है जिसका यूरोप व इस्लाम विरोधियों को भय है कि मुसलमानों में शहादत का शौक़, दीन के लिए त्याग की भावना, ...(शेष पेज 14 पर)

मुसलमानों का मान सम्मान

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

मुसलमानों की ऐसी कौन–कौन सी चीज़ें हैं जिनका सम्मान होना चाहिए और किन चीज़ों के सम्मान का ध्यान रखना चाहिए। इन कुछ चीज़ों की महानता को समझने से पहले यह भी ध्यान में रखना मुनासिब होगा कि एक मुसलमान व्यक्ति स्वयं में बहुत सम्मानित है। लेकिन चूंकि आजकल मुसलमान शब्द और स्वयं मुसलमान आबादी इस हद तक हो चुकी है कि साधारणतयः उसका महत्व निगाहों से ओझल हो जाती है। क्योंकि लोगों ने वास्तविक मुसलमान को देखा ही नहीं और यदि कभी कोई वास्तविक मुसलमान नज़र आ जाता है तो उसको बुज़ुर्ग का नाम दे दिया जाता है। हालांकि मुसलमान और बुज़ुर्ग होना कोई अलग बात नहीं है और यदि यह कोई समझता है तो वह बिल्कुल ग़लत है। क्योंकि जो मुसलमान है वही वास्तव में अल्लाह वाला है। जो मुसलमान है वही बुज़ुर्ग है यद्यपि यह एक अलग बात है कि जो जितना बड़ा मुसलमान होगा वह उतना ही बड़ा बुज़ुर्ग और अल्लाह वाला होगा, इसलिए कि मुसलमान उसी को कहते है जो अपने आप को अल्लाह के हवाले कर दे। अतः जो अपने आप को अल्लाह के हवाले कर दे तो वह अल्लाह वाला है और जो अल्लाह तआला के आदेशों को मानने वाला हो वह बुज़ुर्ग है। अतः इस अनुसार हर मुसलमान बुज़ुर्ग भी है अल्लाह वाला भी है लेकिन इसमें कोई शक नहीं है कि इस समय सही अर्थों में मुसलमान होने के अन्दर जो कमी है वह शत प्रतिशत हमारी ओर से है, यही कारण है कि आज शब्द मुसलमान या मुस्लिम अपनी हैसियत खो बैठा है, वरना वास्तविक मुसलमान के मान सम्मान के बारे में हदीस में आता हैः "यानि अल्लाह के निकट सारी सृष्टि का विनष्ट हो जाना एक मुसलमान के क़त्ल से ज़्यादा भारी नहीं है।" इसीलिए इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि अगर कोई मुसलमान वास्तविक अर्थों में मुसलमान हो जाए तो इस दुनिया की कोई ताक़त गिरा नहीं सकती है और अगर गिर जाए तो सारी कायनात तबाह हो जाएगी।

सीरत–ए–नबवी और इतिहास के पन्नों में अधिकतर घटनाएं ऐसी हैं जो इस बात प्रमाण प्रस्तुत करते है कि जो सही अर्थों में मुसलमान हुआ उसका कोई बाल भी बांका नहीं कर सका है। रिवायत में आता है कि एक बार रसूलुल्लाह स0अ0 किसी ग़ज़वे (युद्ध) से लौट रहे थे कि रास्ते में आराम के लिए कहीं पड़ाव डाला, अचानक किसी काफ़िर ने पेड़ पर लटकी हुई आप स0अ0 की तलवार को खींच लिया कि अब मुझसे तुमको कौन बचाएगा? तो आप स0अ0 ने बड़े ही संतुष्ट भाव से उत्तर दियाः अल्लाह, और अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि यह आवाज़ सुनकर उसके हाथ से तलवार छूट गयी और आप स0अ0 ने तलवार अपने हाथ में ले ली, फिर फ़रमायाः अब तुझको कौन बचाएगा? उसने कहा कि आप ही माफ़ कर सकते हैं, इसलिए आप स0अ0 ने उसे माफ़ कर दिया। ज्ञात हुआ कि आप स0अ0 ने दिल की गहराई से जो अल्लाह का शब्द निकाला तो तलवार लेकर खड़ा व्यक्ति भी आपका कुछ न कर सका।

इसी तरह शेख़ अज़ीज़ुद्दीन बिन अब्दुस्सलाम रह0 ने जब मिस्र में सभी मंत्रियों और राजाओं पर कुफ़्र का फ़तवा लगा दिया तो पूरी जनता आपकी विरोधी हो गयी और सबने यह तय किया कि उनको मिलकर मार देते हैं। अतः समस्त मंत्री और राजा इत्यादि शेख़ साहब के घर के पहुंचे लेकिन जब शेख़ साहब ने कारण पूछा कि आप लोगों का आना क्यों हुआ है? तो सब होश खो बैठे, और कहाः आप जो चाहें करे, आपकी मर्ज़ी सुनने के लिए आएं हैं। अतः शेख़ साहब ने कहाः तुम सबको नख़्ख़ास में बेचना चाहता हूँ अतः सब आपकी इस बात पर राज़ी हो गए और नख़्ख़ास गए, हज़रत शेख़ साहब ने सबको बेचा और आज़ाद कर दिया। इससे पता चलता है कि यदि कोई व्यक्ति सही तौर पर अल्लाह वाला हो जाए तो उसको कभी कोई शासन डरा नहीं सकता है।

इसी तरह आख़िर दौर में हज़रत मौलाना अली मियाँ रह0 के ख़िलाफ़ न जाने कितनी ख़बर आती रहीं कि पुलिस को आदेश मिल चुका है कि मौलाना को चौबीस घंटे के अन्दर हिरासत में लिया जाएगा लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हो सका क्योंकि जो अल्लाह वाला सही अर्थों में मुसलमान होता है पूरी सृष्टि उसका सम्मान करती है और अल्लाह तआला की उस पर ख़ास निगाह रहती है। यह वह घटनाएं हैं जिनसे यह बात स्पष्ट होती है कि यदि कोई व्यक्ति वास्तविक अर्थों में अल्लाह वाला हो जाए तो दुनिया की कोई ताक़त उसका बाल नहीं बाका कर सकती है। क्योंकि जो व्यक्ति अपने आप को अल्लाह के

हवाले कर देता है तो वह अल्लाह के निकट सम्मानित हो जाता है। इसीलिए फ़रमाया गयाः पूरी सृष्टि का विनाश अल्लाह के निकट कोई महत्व नहीं रखता, जितना कि एक मुसलमान को मार डालना।

सुरक्षा और सम्मान के संबंध से यह बात ध्यान में रखना आवश्यक होगा कि हर व्यक्ति पर जिस प्रकार दूसरे की जान, माल और इज़्ज़त का सम्मान आवश्यक है वैसे ही उसको अपने साथ भी करना आवश्यक है। क्योंकि अल्लाह ने हर एक को सम्मानित बनाया है। इसीलिए कुरआन मजीद में आता है "यानि अगर कोई व्यक्ति किसी मोमिन को क़त्ल कर दे तो वह हमेशा के लिए जहन्नम में रहेगा" यह तो दूसरे के सम्मान के संबंध से हुआ लेकिन उसी की तुलना में स्वयं की जान के संबंध में आता है कि यदि किसी ने आत्महत्या की तो उसको उसी हाल में अज़ाब दिया जाता रहेगा। यहीं से यह बात स्पष्ट हो गयी कि किसी व्यक्ति को न दूसरे का हक़ मारने की आज्ञा है और न ही अपने किसी क़रीबी का हक़ मारने की आज्ञा है। यूरोप की सभ्यता के विपरीत जिनका कहना है कि यदि कोई व्यक्ति अपने आप को मारना चाहता है तो उसको पूरा अधिकार है कि वह मार सकता है। लेकिन इस्लाम में ऐसे गन्दे काम की कदापि आज्ञा नहीं दी गयी है। यहां तक कि केवल मारना ही नहीं बल्कि शरीअत की नज़र में वे सभी काम मना हैं जिनसे जान को कोई नुक़सान पहुंच सकता हो। यही कारण है कि हर वह चीज़ जिससे सेहत के ख़राब होने की संभावना हो सकती थी इस्लाम ने उसको निषेध घोषित कर दिया हैः (जैसे बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू इत्यादि) क्योंकि हर इनसान की जान अल्लाह के निकट सम्मानित है। इसीलिए हज़रत थानवी रह0 ने यहां तक लिखा है कि सुबह का टहलना यदि आपकी सेहत के लिए आवश्यक है तो आपके लिए चाश्त की नमाज़ पढ़ने से बेहतर यह है कि सुबह को टहलें। पता चला कि सेहत का ठीक होना भी अच्छी बात है और उसकी सुरक्षा करना भी आवश्यक है। लेकिन यदि कोई व्यक्ति सेहत का ध्यान नहीं रखता और वे चीज़ें प्रयोग करता है जिनसे सेहत को नुक़सान पहुंचता है तो उनके प्रयोग की शरीअत में कोई गुंजाइश नहीं। और यदि यह हो कि कोई व्यक्ति आत्महत्या करने पर उतर आए तो यह बहुत बड़ा जुर्म है। क्योंकि शरीअत में तो यहां तक मना किया गया है कि कोई व्यक्ति कंकरी फेंक कर भी किसी चीज़ की ओर इशारा न करे। कहीं ऐसा न हो कि वह किसी को लग जाए और उसकी आंख, कान, नाक में से कोई चीज़ ज़ख़्मी हो जाए। इसी तरह खुला हुआ चाकू या तलवार लेकर लोगों के सामने बैठने से मना किया गया है, क्योंकि उसके किसी के लग जाने का अनुमान होता है। बल्कि हदीस में यह भी आता है कि चाकू से कभी भी तस्मा इस तरह न काटो कि तुम्हारे पैर में ज़ख़्म आ जाए। इसी तरह मना किया गया कि मज़ाक़ में भी कभी भी किसी की तरफ़ खुले हुए चाकू से इशारा न करो, क्योंकि जान तुम्हारी नहीं अल्लाह की दी हुई है, जिसको लेने का भी अधिकार उसी को है। इसी लिए आदेश है कि जब जिहाद हो उस समय अपनी जानों को अल्लाह के लिए न्यौछावर कर दिया करो। यहां तक कि उस समय अल्लाह के रास्ते में लड़ना ही सबसे श्रेष्ठ काम है और शहीदों का बहुत ऊंचा स्थान बताया गया है।

दूसरी समस्या धन–संपदा के सम्मान की है। जिसमें अधिकतर लोग केवल यह समझते हैं कि दूसरे के धन व संपदा की मांग शरीअत में की गई है कि किसी का धन व सम्पत्ति को हड़प न लिया जाए। लेकिन अपने बारे में कोई नहीं समझता कि अल्लाह तआला ने धन संपदा हमको दी है यह वास्तव में उसी की है अतः उसका हक़ भी यह है कि हम उस माल को ग़लत रास्ते पर न लगाएं। इसीलिए यह बात ध्यान में होनी चाहिए कि जिस प्रकार दूसरों के माल को हड़पना नाजाएज़ है उसी तरह अपने माल को ग़लत जगह ख़र्च करना भी नाजाएज़ है। अगर कोई आदमी अपने धन को सही जगह पर लगाता है तो उसके बारे में आता है कि यदि धन की सुरक्षा करने में कोई उसे मार भी दे तो उसका नाम शहीदों की लिस्ट में गिना जाएगा। यानि अगर धन की रक्षा में मार दिया गया तो वह व्यक्ति शहीद है।

तीसरी चीज़ मान सम्मान है। मान सम्मान का मामला भी यही है कि अल्लाह का दिया हुआ है। क्योंकि अल्लाह ने हर मुसलमान को सम्मानित बनाया है। इसी वजह से रिवायतों में आता है कि किसी व्यक्ति के लिए यह जाएज़ नहीं कि वह किसी को कमतर समझे या उसको ज़लील करे या अपमानित समझे चाहे कितना ही साधारण मनुष्य हो और चाहे किसी ख़ानदान का हो। यदि वह ईमान वाला है तो सम्मानित और सम्मान करने योग्य है। पता चला कि जब एक मुसलमान का इतना श्रेष्ठ स्थान है तो उसकी भी यह ज़िम्मेदारी है कि वह अपने सम्मान को न रौंदे और ऐसा कोई काम न करे जो उसके लिए अपमान का कारण है।

मुहम्मदी जीवन (स०अ०)

कुरआन करीम के आइने में

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुहब्बतः रसूलुल्लाह स0अ0 से मुहब्बत ईमान की निशानी है। खुद एक जगह रसूलुल्लाह स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः "तुममें से कोई उस वक़्त तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके निकट उसके पिता से अधिक उसके पुत्र से अधिक और सभी लोगों से अधिक प्रिय न हो जाऊं।"

यह स्तर है आप स0अ0 की मुहब्बत का। एक ओर माता–पिता का आदेश हो, संतान की इच्छा हो, समय की मांग हो, समाज के बंधन सामने हों, और दूसरी ओर आप स0अ0 के आदेश हों, आप स0अ0 का जीवन सामने हो, आप स0अ0 की शिक्षाएं एवं कथन हों, यह परीक्षा की घड़ी है, किससे प्रेम अधिक है और झुकाव किस ओर है, वास्तव में यह प्रेम का स्तर है कि ईमान वाला हर हाल में रसूलुल्लाह स0अ0 की एक–एक अदा पर फ़िदा हो। रसूलुल्लाह स0अ0 की मुबारक सुन्नतों के लिए सब कुछ त्याग देने का जज़्बा रखता हो। जब आप स0अ0 का तरीक़ा सामने आ जाए तो उसके आगे हर चीज़ कमतर हो। अल्लाह तआला ने इस मुहब्बत को और अधिक स्पष्ट कर दिया और यह घोषणा कर दीः "माता–पिता क्या, संतान क्या, परिवार क्या, आपके लिए तो जान की भी क्या क़ीमत है, सब कुछ आप पर कुर्बान, यह वास्तविक प्रेम है, जो अल्लाह के रसूल स0अ0 से ईमान वालों को होना चाहिए।"

उहद की जंग में एक औरत मदीने से निकली। रसूलुल्लाह स0अ0 के शहीद होने की ख़बर आ गयी थी। आप स0अ0 को पूछती जाती थीं। किसी ने कहाः तुम्हारे पिता शहीद हो गए, कहने लगीं हुज़ूर की ख़बर बताओ, आवाज़ आयी कि तुम्हारे पति भी शहीद हो गए, बोलीं मैं तो हुज़ूर की ख़ैरियत पूछती हूं, बताया गया कि बेटा भी शहीद हो गया, वहीं कहने लगीं कि हुज़ूर के बारे में बताओ, जब आप स0अ0 की ख़ैरियत मालूम हुई तो कहने लगींः आप के सामने हर मुसीबत कमतर है।

बाप भी, भाई भी, शौहर भी, बिरादर भी फ़िदा।
ऐ शहे दीं तेरे होते हुए क्या चीज़ हैं हम।।

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि0 को काफ़िरों ने सूली पर लटका रखा था और उनके शरीर को भालों से छेद रहे थे और जगह–जगह से चीरा लगा रहे थे और पूछते थे कि कहो जनाब अब तुम क्या सोच रहे हो कि तुम्हारी जगह मुहम्मद स0अ0 हों और तुम बच जाओ। तो वे भावुक होकर कहने लगे कि, यह क्या कहते हो, यह मुझको गवारा नहीं कि मैं बच जाऊं, आप स0अ0 के मुबारक क़दम में एक कांटा भी चुभे और मैं बच जाऊं।

उदह की जंग में काफ़िरों ने हमला किया। चारों ओर से तीरों की बौछार कर रहे थे। वे अत्याचारी रसूलुल्लाह स0अ0 पर तीर बरसा रहे थे। सहाबा बहादुरी के साथ आगे बढ़ रहे थे और एक–एक करके पांच अन्सारी सहाबा आपके लिए अपनी जान न्यौछावर कर चुके थे। हज़रत तलहा रज़ि0 ने एक ओर अपनी पीठ को ढाल बना रखा था। एक सहाबी ने अपने हाथ को ढाल बना लिया था। उस पर इतने तीर लगे कि वह हाथ हमेशा के लिए बेकार हो गया।

हज़रत सिद्दीक़–ए–अकबर रज़ि0 से बढ़कर कौन होगा? ज़ालिमों ने उनको इतना मारा था कि चेहरा पहचानना मुश्किल हो रहा था। मारते–मारते बिल्कुल बेदम कर दिया। होश में आए तो कहने लगे कि मुझ पर खाना–पीना हराम है जब तक कि मैं रसूलुल्लाह स0अ0 का मुबारक चेहरा देखकर अपनी आंखें रोशन न कर लूं। घर की दो औरतें सहारा दे–दे कर बड़ी मुश्किल से आप स0अ0 की सेवा में लायीं तो जाकर सुकून मिला।

आप स0अ0 के दुनिया से जाने के समय सहाबा की अजीब हालत हो गयी। हज़रत उमर रज़ि0 को यक़ीन नहीं आता था कहते थे कि यह अगर किसी ने कहा कि आप स0अ0 की मृत्यु हो गयी तो उसकी गर्दन धड़ से अलग कर दूंगा। हज़रत सिद्दीक़–ए–अकबर एक मज़बूत चट्टान बन कर खड़े हुए और प्रतिनिधित्व किया और लोगों का संभाला।

जान न्यौछावर करने की घटनाएं सहाबा किराम के जीवन में देखी जाएं तो कौन उससे ख़ाली है और वे सब तो ईमान वालों के सरों का ताज हैं। रसूलुल्लाह स0अ0 के गुलामों के गुलामों को देखिए और यह क्रम आगे बढ़ाते जाइए। हर युग में, हर क्षेत्र में, कठिन से कठिन परिस्थितियों में आप स0अ0 के मतवाले मौजूद हैं। आप स0अ0 के लिए जान देने वाले आज भी मौजूद हैं।

शायरों की महफ़िल है। एक शायर जिसका ईमान उसके दिल के किसी कोने में एक चिंगारी के रूप में दबा हुआ है। बड़े–बड़े शायरों व साहित्यकारों की चर्चा हो रही है और वह सबको चुटकियों में उड़ा रहा है। इसी बीच किसी बुरी प्रवृति के व्यक्ति ने रसूलुल्लाह स0अ0 का नाम लेकर पूछा, शायर बेक़ाबू हो गया। शराब की बोतल हाथ में थी खींच कर मारी और बोलाः ऐसी गुस्ताख़ महफ़िल में आप का नाम?? क्या मैं इतना बुरा हो गया। उसके बाद इतना रोया कि हिचकियां बंध गयीं और जीवन बदल गया।

यह मुहब्बत जो दिल के किसी कोने में है उसको दिल व दिमाग़ पर हावी कर लिया जाए और इस प्रकार हावी कर लिया जाए कि वह ईमान की कसौटी साबित हो। कर्मों में उसका प्रभाव प्रकट हो और दूर से देखने वाला देखते ही समझ ले कि यह किसी का मतवाला है। नबी का शैदायी है। उसके जीवन के एक एक कोने पर उसका प्रकाश दिखाई देता हो। यह उस वास्तविक प्रेम की मांग है और वास्तव में रसूलुल्लाह स0अ0 से मुहब्बत ही ईमान की पहचान है और मनुष्य के जीवन में रसूलुल्लाह स0अ0 के जीवन की छवि आ जाना ही वास्तविक प्रेम की निशानी है। इसीलिए एक जगह स्वयं आप स0अ0 ने यह कथन कहाः "तुममें से कोई उस समय तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि वह अपनी इच्छाएं उस चीज़ के अधीन न कर ले जिसको मैं लेकर आया हूं।"

रिसालत का स्थानः हज़रत आदम अलै0 के बाद जब–जब दुनिया में गुमराही फैली और लोग अपने सृष्टा व मालिक को भूलने लगे तो अल्लाह ने नबी (संदेष्टा) भेजा। अल्लाह का कथन हैः "कोई क़ौम (समुदाय) ऐसा नहीं गुज़रा जिसमें नबी (संदेष्टा) न आया हो।" लेकिन जो आया वह अपनी क़ौम व समुदाय के लिए आया, अपने क्षेत्र के लिए आया, किन्तु एक ऐसा आया जो सारे जहान के लिए आया और उसकी रिसालत की फैलाव युगों व समुदायों के आगे था। अल्लाह तआला ने उसको जहानों के लिए रहमत घोषित कर दिया।

स्वयं रसूलुल्लाह स0अ0 से सम्पूर्ण मानवता को संबोधित कराया जा रहा हैः "कह दीजिए कि ऐ लोगो! मैं तुम सबकी ओर उस अल्लाह का पैग़म्बर (संदेष्टा) हूं।"

मक्का के मुश्रिकों का हाल यह था कि उन्होंने हठधर्मी अपना रखी थी। आप स0अ0 के नबी होने का इनकार करते थे और विभिन्न रूप से इनकार का प्रदर्शन करते थे। कभी कहते थे कि यह कलाम (कुरआन) जो आप सुनाते हैं कोई आकर आपको सिखा जाता है और अल्लाह को रसूल ही बनाना था तो किसी सरदार को बनाते। कुरआन उतरता तो किसी बड़े आदमी पर उतरता। "और वे बोले कि यह कुरआन दोनों बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों न उतरा।"

अल्लाह तआला आप को सम्बोधित कर उन सभी लोगों को सुनाता है जो इस प्रकार की बातें बनाया करते थे, इरशाद हुआः "यह अल्लाह की वे आयतें हैं जिन्हें हम आपको ठीक–ठीक सुना रहे हैं और निसदेंह आप रसूलों ही में से हैं।" सभी मनुष्यों को सम्बोधित करके अल्लाह तआला कहता हैः "ऐ लोगो! तुम्हारे पास रब की ओर से रसूल हक़ (सत्य) लेकर आ चुका, बस ईमान ले आओ तुम्हारा भला हो।"

रसूलुल्लाह स0अ0 के बारे में पहले यह घोषणा की जा रही है कि रसूलुल्लाह स0अ0 अल्लाह की ओर से भेजे गए हैं। रसूलुल्लाह स0अ0 जो लेकर आएं हैं वह सब सत्य है। अल्लाह की ओर से है। जिसमें किसी प्रकार के संदेह की संभावना नहीं। जब सत्य तुम्हारे पास आ चुका तो अब इन्तिज़ार किस बात का है। तुम्हारे लिए भलाई इसी में है। तो इसको मान लो। बस आयत में पहले सूचना दी गयी फिर ईमान लाने का आदेश दिया गया और आगे धमकी के रूप में चेतावनी दी जा रही है किः "और अगर तुम नहीं मानते हो तो आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह सब अल्लाह ही का है और अल्लाह ख़ूब जानने वाला, हिकमत वाला (तत्वदर्शी) है।"

आयत के इस भाग में दो बाते बतायी जा रही हैं। एक तो यह कि जो कुछ भी ज़मीन व आसमान में है वह सब अल्लाह की सम्पत्ति है। सब उसी की सृष्टि है। वह कठोर से कठोर सज़ा दे सकता है न मानने वालों को और दूसरा भाग यह बता रहा है कि तुम यह न समझना कि छूट कर निकल जाओगे। तुम्हारे सारे कुकर्मों की सूचना अल्लाह को है। वह तुम्हारी पकड़ करेगा। फिर यह भी स्पष्ट किया जा रहा है कि उसके सब काम हिकमत से भरे हैं। तुम्हें अभी बताया जा रहा है कि तुम सुधार कर लो। अपने ईमान व अक़ीदे (आस्था) को ठीक कर लो और उस आख़िरी नबी को मान लो। इसी में तुम्हारी कामयाबी है। वरना तुम्हें इसका भुगतान भुगतना पड़ेगा।

नमाज़ के आदाब व सवाब की चीज़ें

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

आदाब अदब का बहुवचन है। नमाज़ के आदाब का अर्थ उन कार्यों से है जो रसूलुल्लाह (स0अ0) से एक या दो बार साबित हों। लेकिन रसूलुल्लाह (स0अ0) ने उनकी पाबन्दी न की हो। जैसे रुकूअ व सज्दे में पढ़ी जाने वाली तस्बीह को तीन से अधिक बार कहना इत्यादि। इन कामों को आदाब के अतिरिक्त नफ़िल, मन्दूब और मुस्तहब कहा जाता है। इन कामों के बारे में यह आदेश है कि इनका करना सवाब व फ़ज़ीलत का कारण है लेकिन इनको छोड़ देने से न गुनाह होगा न इताब होगा। (शामीः 353/1)

निम्न में हम कुछ आदाबों का वर्णन कर रहे हैं। हमें उनको अपनाना चाहिए ताकि ज़्यादा से ज़्यादा सवाब मिले लेकिन यदि कोई छोड़ रहा हो तो उसकी बहुत अधिक पकड़ नहीं करनी चाहिए। हां नर्मी के साथ समझाया जा सकता है कि इस काम में फ़ज़ीलत बहुत है।

1– अगर हाथ चादर से या रुमाल या आस्तीन से छिपे हुए हों तो मर्द के लिए सवाब इसमें है कि हाथ चादर इत्यादि से बाहर निकाल कर तकबीर–ए–तहरीमा कहे। औरत चादर या दुपट्टे के अन्दर से ही तकबीर कहेगी।

(नूरुलईज़ाहः 73, शामी 353/1)

इसीलिए हज़रत वाइज़ बिन हिज्र नमाज़ में दाख़िल हुए तो रसूलुल्लाह (स0अ0) ने रफ़ाअदैन किया, तकबीर–ए–तहरीमा कही, फिर कपड़ा लपेट लिया फिर दाएं हाथ को बाएं हाथ पर रखा। (रवाहु मुस्लिम)

2– पूरे खुशूअ व ख़ुज़ूअ (विनम्रता व सही ढ़ंग से) नमाज़ पढ़ने पर ही कुरआन मजीद ने कामयाबी की ख़ुशख़बरी सुनायी है। अतः नमाज़ पूरे दिल से पढ़ना चाहिए। इसके लिए कुछ काम सहयोगी होते हैं, इसीलिए उलमा ने उनको मुस्तहब यानि सवाब वाला घोषित कर दिया है। वे काम हैं कि खड़े रहने की स्थिति में अपनी निगाह सजदे की जगह की ओर रखे, रुकूअ की हालत में क़दमों पर निगाह रखे, सजदे की हालत में नाक के बांसे की ओर निगाह रखे, क़ादा (अर्थात बैठने) की हालत में गोद पर निगाह रखे, दाहिनी ओर सलाम फेरते समय दाहिने कंधे पर और बाएं ओर सलाम फेरते समय बाएं कंधे पर निगाह रखे। (शामीः 353/1)

अतः रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) आसमान की ओर निगाह उठाकर नमाज़ पढ़ा करते थे, फिर जब यह आयत नाज़िल हुई, "सफल हो गए वे मोमिन जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ (विनम्रता) अपनाते हैं।" तो आपने निगाह सजदे की जगह पर कर ली।

(सुनन अलकुबरा लिल बैहिक़ीः 283/2)

3– जम्हाई (ऊंघ आने) को संभव हद तक रोकना। यदि मुंह पर हाथ रखे बिना जम्हाई न रोक सके तो हाथ से मुंह बन्द कर ले। उलमा ने लिखा है कि यदि यह विचार लाया जाए कि नबियों को कभी जम्हाई नहीं आती थी तो जम्हाई रुक जाती है। इसके बारे में कई ने अपना अनुभव भी बताया है। (शामीः 353/1)

जम्हाई सुस्ती व उकताहट की पहचान है। इसलिए नमाज़ से बाहर भी इसके लिए यही आदेश है। इसीलिए बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबूहरैरा रज़ि0 से रिवायत नक़ल की है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमायाः जहां तक जम्हाई का संबंध है तो वह शैतान की ओर से होती है, तो जब तुममें से किसी को जम्हाई आए, तो जहां तक संभव हो उसको रोके, इसलिए कि जब तुममें से किसी को जम्हाई आती है तो शैतान इससे हंसता है।

4– जहां तक संभव हो खांसी और डकार से परहेज़ करे। यदि अचानक आ ही जाए उसके क़ाबू में न हो तो कोई हर्ज नहीं और यदि अनावश्यक जानबूझ कर खांसे तो उससे नमाज़ ख़राब हो जाती है। यहां पर आशय उस डकार या खांसी से है जिसकी ओर तबियत माएल हो लेकिन रोकना संभव हो तो उससे बचना सवाब का काम है। (शामीः 353/1)

5– नमाज़ में क़िराअत की मात्रा सुन्नत के अनुसारः

नमाज़ पढ़ने में मनुष्य की तीन अलग–अलग हालते होती हैं। उन्हीं हालतों के अनुसार तीन अलग–अलग मात्रा को सुन्नत व सवाब वाला घोषित किया गया है।

पहली हालतः यह कि सफ़र में इज़्तरार की हालत हो। इज़्तरार की हालत का अर्थ यह है कि उसे कोई ख़तरा हो या सफ़र में जल्दी हो। इसी प्रकार इनसान हिज्र की हालत में हो और समय तंग हो गया हो या जान व माल के जाने का भय हो तो सूरह फ़ातिहा के साथ कोई भी सूरह मिला लेना पर्याप्त होगा, चाहे जिस समय की नमाज़ पढ़ रहा हो सबका एक ही आदेश होगा। (हिन्दियाः 77/1)

दूसरी हालतः सफ़र की हालत में हो लेकिन शांति व

सुकून से हो। किसी प्रकार की जल्दी में न हो तो फ़ज्र व ज़ुहर में तवाल मुफ़स्सल की छोटी सूरतें पढ़े जैसे सूरह बुरूज व सूरह इन्फ़ितार इत्यादि ताकि सफ़र की छूट पर भी अमल हो जाए और अस्र व इशा में उससे छोटी सूरतें और मग़रिब में बिल्कुल छोटी सूरतें जैसे वलअस्र व सूरह कौसर जैसी सूरह पढ़ें।

इन दोनों हालतों का वर्णन यद्यपि हदीस में स्पष्ट रूप से नहीं आया है, लेकिन सफ़र में छोटी सूरतों का वर्णन आया है। इसीलिए फ़ुक़्हा (धर्मज्ञाता) ने अपना लिया है। इसीलिए हज़रत उक़्बा बिन आमिर की एक रिवायत में एक सफ़र का वर्णन है। अन्त में हैः जब रसूलुल्लाह (स0अ0) फ़ज्र की नमाज़ के लिए (सवारी से) उतरे तो रसूलुल्लाह (स0अ0) ने सूरह फ़लक व सूरह नास की तिलावत फ़रमायी। (अबूदाऊद, मुसनद अहमद)

दूसरी रिवायत में सूरह "इज़श्शम्सु कुव्विरत" और सूरह "इज़स्समाई अनफ़तरत" का वर्णन है जिसको इत्मिनान के सफ़र पर महमूल किया जा सकता है। (मुस्लिम)

तीसरी हालतः यह है कि मुक़ीम (सफ़र इत्यादि पर न) हो और वक़्त भी तंग न हो तो फ़ज्र व ज़ुहर में तवाल मुफ़स्सल पढ़ना, अस्र व इशा में औसात मुफ़स्सल पढ़ना और मग़रिब में क़िसार मुफ़स्सल पढ़ना अफ़ज़ल व सवाब वाला है। (हिन्दियाः 77/1)

मुफ़स्सल उन सूरतों को कहते हैं जिनमें बार–बार बिस्मिल्लाह के द्वारा अन्तर किया जाए। यह कुरआन के सात हिस्सों में से आख़िरी हिस्से को कहा जाता है और औसात मुफ़स्सल का अर्थ है वे मुफ़स्सल सूरतें जो निसबतन लम्बी हैं, क़िसार मुफ़स्सल का अर्थ है वे मुफ़स्सल सूरतें जो छोटी हैं, जबकि औसात का अर्थ बीच के या दरमियानी के हैं। तवाल मुफ़स्सल सूरह हुजूरात से सूरह बुरूज तक, क़िसार मुफ़स्सल सूरह बुरूज से सूरह लम यकुन तक, जबकि क़िसार मुफ़स्सल सूरह लम यकुन से ख़त्म कुरआन तक। (हिन्दियाः 77/1)

साहब–ए–रद्दुल मुख़्तार ने सूरह बुरूज को तवाल और सूरह लमयकुन को औसात में शामिल किया है। साहब–ए–रद्दुल मुख़्तार ने इसमें फ़ुक़्हा का मतभेद नक़ल किया है। (शामीः 399/1)

हदीस व आसार में बहुत सी रिवायतों में इसी प्रकार क़िराअत का वर्णन किया गया है। लेकिन चूंकि यह कार्य अफ़ज़ल व सवाब वाला है, फ़र्ज़, वाजिब या सुन्नत–ए–ताकीदी नहीं है, अतः उसके ख़िलाफ़ भी आयतें आती हैं। हम इस क्रम के दलील में आने वाली बहुत सी रिवायतों का नीचे वर्णन कर रहे हैंः

हज़रत सलमान इब्ने यसार से रिवायत है कि हज़रत अबूहरैरा रज़ि0 ने फ़रमायाः मैंने किसी भी व्यक्ति के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ी, जिसकी नमाज़ अमुक (यानि हज़रत अम्र बिन अब्दुल अज़ीज़) की तुलना में रसूलुल्लाह (स0अ0) की नमाज़ से अधिक मिलती–जुलती हो। हज़रत सलमान कहते हैंः मैंने उनके पीछे नमाज़ पढ़ी तो वे ज़ुहर की पहली दो रकआतें लम्बी पढ़ते थे, और आख़िर की दो रकआतें हल्की रखते थे, और अस्र की नमाज़ हल्की रखते थे, और मग़रिब में क़िसार मुफ़स्सल पढ़ते थे और इशा में औसात मुफ़स्सल पढ़ते थे और सुबह की नमाज़ में तवाल मुफ़स्सल पढ़ते थे। (नसाई)

हज़रत जाबिर बिन समरह रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) फ़ज्र की नमाज़ में "क़ाफ़ वल कुरआनुल मजीद" और उस जैसी सूरतें पढ़ते थे और आपकी बाद की नमाज़ छोटी होती थी। (मुस्लिम)

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि0 की लम्बी हदीस के आख़िर में है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने इशा की नमाज़ के बारे में आदेश देते हुए फ़रमायाः "वश्शम्सु वज़ुहाहा और वललैलि इज़ा यग़शाहा और सब्बेहिसमा रब्बिकल आला" पढ़ा करो। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हर दो रकआत में सूरह मुकम्मल करना अफ़ज़ल है।

इन सभी व्याख्याओं से मालूम होता है कि हर रकआत में पूरी सूरह पढ़ना अफ़ज़ल है और किसी सूरह का हिस्सा पढ़ना भी बिला किसी कराहत ठीक है और हदीसों से इसका सुबूत भी है। (शामीः 400/1)

इसीलिए हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) फ़ज्र की दोनों रकआत में "कूलू आमन्ना बिल्लाहि" और आले इमरान की आयत "कुल या अहलल किताब तआलू इला कलिमति सवाउम बैनना व बैनकुम" की क़िराअत फ़रमाया करते थे। (मुस्लिम)

अल्लामा काशानी फ़रमाते हैंः यदि सूरह के बीच या आख़िर से तो जायज़ है। फ़क़ीह अबू जाफ़र हिन्दुवाई ने इसी तरह रिवायत नक़ल की है, लेकिन मुस्तहब वही है जिसका हमने वर्णन किया है। (बदाएः 483/1)

एक रकआत में दो सूरह जमा करनाः एक रकआत में दो सूरह पढ़ना मकरूह नहीं है, शर्त यह है कि दो सूरह लगातार हों, लेकिन बेहतर यही है कि इसकी हमेशा की

आदत न डाले। (बदाए सनाएः 482/1)

बीच में छोटी सूरह छोड़ देना या क्रमवार न पढ़नाः यदि पहली रकआत में एक सूरह पढ़ी, उसके बाद एक छोटी सूरह थी वह छोड़ दी, जैसे पहले रकआत में "कुल या अय्युहल काफ़िरून" पढ़ी फिर बीच में "इज़ा जाआ" छोड़ दी और "तब्बत यदा" पढ़ी या सूरह क्रमवार न पढ़ी। जैसे पहली रकआत में सूरह "कुल या अय्युहल काफ़िरून" पढ़ी और दूसरी रकआत में "अलम तरा कैफ़" तो जानबूझ कर ऐसा करना मकरूह है। लेकिन भूले से ऐसा हो जाए तो नमाज़ में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। इसीलिए बीच में छोटी सूरह छोड़कर तिलावत शुरू कर दी या क्रम के विपरीत तिलावत कर दी फिर याद आ गया तो अब तिलावत जारी रखे, उसको छोड़कर सुधार करने की आवश्यकता नहीं है। (शामीः 404/1)

लेकिन यह आदेश फ़र्ज़ का है नफ़िल नमाज़ों में जानबूझ कर भी इस तरह करना मकरूह नहीं है। (शामी)

जुमा के दिन फ़ज्र की नमाज़ में अफ़ज़ल सूरहः जुमा के दिन फ़ज्र की नमाज़ में पहली रकआत में सूरह अलिफ़ लाम मीम सजदा और दूसरी रकआत में सूरह दहर पढ़ना अफ़ज़ल है और रसूलुल्लाह (स0अ0) से साबित है। लेकिन लगातार ऐसा न करे, ताकि लोग इसको ज़रूरी न समझ लें। (शामीः 402/1)

इसी प्रकार रसूलुल्लाह (स0अ0) जुमा की रात में (यानि जुमेरात व जुमा के बीच वाली रात में) मग़रिब की नमाज़ की पहली रकआत में सूरह काफ़िरून और दूसरी रकआत में सूरह इख़लास पढ़ा करते थे। कभी–कभी उसको पढ़ना भी अफ़ज़ल है। (मिशकातः 80/1)

जुमा और ईद की नमाज़ों में अफ़ज़ल सूरहः मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) जुमा और ईद की पहली रकआत में "सब्बेहिसमा रब्बिकल आला" और दूसरी रकआत में सूरह "हल अताका" पढ़ा करते थे। मुस्लिम ही की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) जुमा की पहली रकआत में सूरह जुमा और आख़िरी रकआत में सूरह मुनाफ़िक़ून पढ़ा करते थे और ईद की नमाज़ों में पहली रकआत में "क़ाफ़ वल कुरआनुल मजीद" और दूसरी रकआत में "इक़तराबत साअत" पढ़ा करते थे, लिहाज़ा कभी–कभी उन सूरतों का पढ़ना सवाब वाला और सुन्नत है लेकिन लगातार न पढ़े ताकि लोग इसे ज़रूरी न समझ लें। वल्लाहु आलम

शेष : यूरोप इस्लाम का विरोधी क्यों?

.....बर्दाश्त की ताक़त, और शारीरिक ताक़त व योग्यता रखने वाले तत्व बहुत हैं और उनके क़ब्ज़े में दुनिया के स्ट्राटेजिक स्थान हैं और भौतिक साधनों परिपूर्ण शक्ति के भण्डार उनके नियन्त्रण में हैं। यही उनके लिए चिन्ताजनक है।

विश्व युद्ध में यूरोप को उन योग्यताओं का अनुभव हुआ। उसके कारण यूरोप की शक्ति मुस्लिम क्षेत्रों पर और मुस्लिम आन्दोलनों पर लगातार नज़र रखती रही हैं।

इन कारणों को ध्यान में रखने के बाद यूरोपीय देश चाहे वे पश्चिमी देश हों या पूर्वीय यूरोपीय देश, उनके रवैयों और कार्यवाहियों को समझना आसान है।

एक बात और स्पष्ट करने योग्य है कि इस्लाम विरोधी आन्दोलनों, षडयन्त्रों और नफ़रत फैलाने वाले लिट्रेचर में राजनीति और सैन्य साधनों का बड़ा हिस्सा रहा है और आज़ादी की जंग में मुसलमानों की क़ुर्बानियों विशेषतयः अलजज़ाएर और अफ़ग़ानिस्तान के इतिहास से यूरोप ने ऐसे लोग तैयार किए जिन्होंने उस उद्देश्य को पूरा किया और वर्तमान समय में पश्चिमी मीडिया इस काम को बख़ूबी अन्जाम दे रहा है और मुस्लिम देशों की सत्ता व सरकारें पश्चिम के इस मिशन को पूरा कर रही हैं।

फ़्रांस और ब्रिटेन के पतन के बाद इस मुहिम का नेतृत्व अब अमरीका ने संभाल लिया है और इसमें उसको सहयूनी (ज़ियोनिज़्म) शक्तियों का पूरा सहयोग प्राप्त है।

पश्चिम के षडयन्त्र और कार्यवाहियों के बावजूद अलहम्दुलिल्लाह इस्लाम फैल रहा है और मुसलमानों में त्याग की भावना और दीन से लगाव बढ़ रहा है और यूरोप की वास्तविकता लोगों के सामने आ रही है। इसका उदाहरण स्वयं वेटिकर की यह रिपोर्ट है जो कुवैत की अरबी पत्रिका "अलमुजतमा" ने अप्रैल 2014 में प्रकाशित की है। वेटिकन की इस रिपोर्ट के अनुसार पूरी दुनिया में सबसे अधिक फैलने वाला धर्म इस्लाम है। इस्लाम विरोधी मुहिम के बावजूद एक साल में मुसलमानों की संख्यां ईसाईयों की तुलना में तीन मिलियन बढ़ी है। वेटिकन के बयान के अनुसार एक अरब, तीन मिलियन, बाइस हज़ार से अधिक है जो ईसाईयों की तुलना में तीन मिलियन से अधिक है। इस समय दुनिया में मुसलमानों की आबादी का अनुपात 19 प्रतिशत है। इस्लाम क़ुबूल करने वालों में अधिकतर पश्चिम की ईसाई, यहूदी और दूसरे धर्म के मानने वाले हैं।

क़यामत की निशानियाँ

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

हदीसः हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि0) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः क़यामत से पहले एक ज़माना ऐसा आएगा जिसमें जिहालत उतरेगी, इल्म उठा लिया जाएगा और मार–काट बढ़ जाएगी।

फ़ाएदाः ईमान वालों के दिमाग़ में जगह–जगह यह बात बिठाई गयी है कि दुनिया की ज़िन्दगी हमेशा के लिए नहीं है। हर किसी को यहां से एक दिन जाना है और एक दिन वह भी आएगा जब दुनिया की हर एक चीज़ समाप्त हो जाएगी। केवल अल्लाह तआला की ज़ात बाक़ी रह जाएगी। मगर ऐसा समय आने से पहले नबी करीम (स0अ0) ने बहुत सी निशानियां बयान की हैं, जिनके प्रकट होने से यह समझा जाएगा कि अब क़यामत बहुत क़रीब है। उन निशानियों में अहम निशानियां यह हैंः

1. हज़रत मेंहदी का प्रकट होना।
2. हज़रत ईसा का उतरना।
3. याजूज व माजूज का निकलना।
4. दज्जाल का निकलना।
5. दाब्बतुल अर्ज़ (एक जानवर) का निकलना।
6. सूरज का पश्चिम से उदय होना।

फिर भी क़यामत की इन निशानियों और बड़ी निशानियों के अतिरिक्त रसूलुल्लाह (स0अ0) ने बहुत सी चीज़ों के संकेत दिए हैं कि उनके चलन का जनसाधारण में आम होना क़यामत के क़रीब होने की दलील है। जैसा कि उपरोक्त रिवायत से पता चलता है कि आख़िरी ज़माने में जिहालत आम हो जाएगी। इल्म उठा लिया जाएगा और मार–काट का सिलसिला बढ़ जाएगा। इसके अलावा दूसरी रिवायतों में आता है कि क़यामत के निकट होने की पहचान में से यह भी है कि अमानतों की सुरक्षा समाप्त हो जाएगी। भूकम्प की अधिकता होगी। अश्लीलता जनसाधारण में फैल जाएगी। ज़िना (अवैध संबंध) की अधिकता होगी। ब्याज व रिश्वत का बाज़ार गर्म होगा। लोग थोड़े से फ़ायदे को पाने के लिए अपने दीन का सौदा कर लेंगे, इत्यादि।

इस परिदृश्य में यदि आज के ज़माने पर एक पड़ताल पूर्ण दृष्टि डाली जाए तो यह पता चलेगा कि इस समय यह सारी बातें हमारे समाज में किसी न किसी हद तक प्रचलित हो चुकी हैं। उपरोक्त हदीस में जिहालत के उतरने, और ज्ञान के उठा लिए जाने की ओर जो इशारा किया गया है, उसको सामने रखते हुए यह अंदाज़ा लगाना मुश्किल न होगा कि आजकल जिहालत कितनी तेज़ी से फैल रही है और वह वास्तविक ज्ञान जिससे मानवता की प्यास बुझती है कितनी तेज़ी से मिटता जा रहा है।

निसंदेह यह क़यामत ही की निशानियों में से है कि आज शिक्षा के स्तर की श्रेष्ठता के चर्चे हैं। शिक्षण संस्थाओं की अधिकता है। नये साधनों को अपनाकर ज्ञान के प्रचार पर बल दिया जा रहा है। लेकिन इसके बावजूद भी लोग उस ज्ञान की तलाश में हैं जो सुकून देता हो, इस बात की ओर मार्गदर्शन करता हो कि माता–पिता के साथ क्या बर्ताव होना चाहिए, भाई–भाई का क्या संबंध होना चाहिए, बहनों और बेटियों के साथ क्या बर्ताव करना चाहिए, पड़ोसियों के क्या अधिकार हैं।

इन सब चीज़ों की ओर ध्यान देने से इस बात का एहसास होता है कि यद्यपि दुनिया शिक्षा के श्रेष्ठ स्तर तक पहुंच गयी है, फिर भी वास्तविकता यह है कि वह वास्तविक ज्ञान से अनभिज्ञ व अनजान हो चुकी है। उस ज्ञान के भंवर में फंस कर रह गयी है जो ज्ञान केवल भौतिकता के तट पर हमको ले जाता है। इसीलिए समाज में नासमझी की बातें यानि जिहालत आम हो रही है और ज्ञान का स्तर घटता जा रहा है।

हदीस में क़यामत के निकट होने की पहचान में यह भी बताया गया है कि मार–काट की अधिकता होगी। मार–काट के अधिक होने का मूल कारण लोगों में जिहालत का प्रचलन और लालच व हवस का हद से अधिक बढ़ जाना है। यह एक ऐसा नासूर है कि जो भी इसमें पड़ जाएगा तो उसको अपने माता–पिता, भाई, बहन, रिश्तेदारों के बीच भी कोई अन्तर बाक़ी नहीं रहता। वह अपने निजी लाभ के लिए मानवता की सारी हदों को पार करना अपना कर्तव्य समझता है और बात हत्या व मार–काट तक पहुंच जाती है। वर्तमान समय में यह चीज़ इतनी अधिक चलन में हो गयी है कि शायद ही कोई दिन ऐसा ख़ाली जाता हो जिसमें इस प्रकार की ख़बरें अख़बारों की अन्दर छपती न हों। वास्तव में यह सब क़यामत के क़रीब होने की निशानियां हैं जिनसे हर मुसलमान को सीख प्राप्त करके अपने सुधार की चिन्ता करनी चाहिए।

कुरआन करीम का शैक्षिक रूप

अब्दुस्सुब्हान नाशुदा नदवी

कुरआन करीम का शिक्षा का तरीक़ा बिल्कुल अलबेला है। नये व पुराने की सभी चर्चाओं से ऊपर। आख़िर क्यों न हो। अल्लाह का कलाम (ईशवाणी) इतना श्रेष्ठ है कि उसके अन्तर्गत पुराना, नया, मौजूद, समाप्त हो चुका, अतीत, वर्तमान, भविष्य सब आ जाते हैं। मनुष्य की प्राकृतिक प्यास को इस वाणी ने सदा बुझाया है और यहीं से प्यासी प्रकृतियां आगे भी प्यास बुझाया करेंगी। कुरआन करीम अपने अन्दर शिक्षा के विभिन्न रूप रखता है। जिनमें से कुछ रूप आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं:

1– स्पष्टता: शिक्षा का मूलभूत नियम यह है कि बात स्पष्ट कही जाए। वह शिक्षक जो गोल–मोल ढंग से अपनी बात बताए वह कभी सफल शिक्षक नहीं बन सकता है। अल्लाह कि किताब ने इस तरीक़े पर बहुत ज़ोर दिया है। बहुत सी जगहों पर स्वयं कुरआन ही की विशेषता "कुरआनुल मुबीन" लायी गयी है। कई जगह पर इसको "बयान व तफ़सील" कहा गया है। नबियों व रसूलों को अल्लाह ने इस बात का ज़िम्मेदार बनाया कि वे पूरी स्पष्टता के साथ अपनी दावत दें, "हमने हर रसूल को उसकी क़ौम की ज़बान देकर भेजा ताकि वह पूरी स्पष्टता के साथ क़ौम के सामने अपनी बात प्रस्तुत करे।" यही कारण है कि हर रसूल को अपने समुदाय की सबसे श्रेष्ठ भाषा के साथ भेजा गया।

बयान व तबिययीन का मूल्य अल्लाह के निकट इतना अधिक है कि केवल इसी संदर्भ से हज़रत मूसा अलै0 ने हज़रत हारून के लिए नुबूव्वत मांगी। अल्लाह ने उनको भी नुबूव्वत दे दी। तफ़सील का यहां समय नहीं।

"और मेरे भाई हारून मुझसे बढ़कर ज़बान वाले हैं तो उनको भी मेरे साथ रसूल बना दीजिए, मेरी सहायता के लिए वे मेरी पुष्टि करेंगे, मुझे ख़तरा है कि लोग मुझे झुठलाएंगे, इरशाद हुआ कि हम तुम्हारे भाई को तुम्हारे बाज़ू की ताक़त अवश्य बनांएगे।"

2– दलील: अपनी बात को दलील से सजाकर प्रस्तुत करना शिक्षा का महत्वपूर्ण रूप है। बिना दलील की बात बहुत कम स्वीकार की जाती है। शिक्षा वह है जिसमें दिमाग़ के बन्द दरवाज़े खोल दिए जाएं और पूरी तरह से बात को समझ लिया जाए और अपनी बात पर वे दलीलें दी जाएं जिनको अक़्ल स्वीकार करे और मनुष्य यकायक ही उसकी ओर आकर्षित होने लगे। शिक्षा का यह रूप कुरआन करीम का दिया हुआ है। जगह–जगह पर अल्लाह तआला ने अपनी ओर से दलीलें प्रस्तुत की हैं और इनकार करने वालों से दलीलें मांगी हैं: "कह दीजिए कि अगर तुम सच्चे हो तो अपनी दलील ले आओ।" (सूरह नम्ल: 64) "आप कह दीजिए कि तौरात ले आओ और उसे पढ़ो अगर सच्चे हो।" (सूरह आले इमरान: 93) "कहिये कि ज़रा मुझे उन साझीदारों को दिखाओ जिसको तुमने उसके साथ मिला रखा है, कोई नहीं वह अल्लाह ज़बरदस्त है हिकमत रखता है।" (सूरह सबा: 27) "ज़रा मुझे दिखाओ ज़मीन से उन्होंने क्या पैदा किया या आसमान में उनकी कोई साझेदारी है।" (सूरह फ़ातिर: 40) यह सभी आयतें दलील की मांग करती हैं। दलील के अध्याय में यह आयतें पर्याप्त होंगी। "अल्लाह के सिवा और उपासक होते तो दोनों की व्यवस्था बिगड़ कर रह जाती।" (सूरह अम्बिया: 22) "और न उसके साथ कोई और ख़ुदा है (अगर ऐसा होता) तो हर ख़ुदा अपनी मख़लूक़ लेकर चल देता और सब एक दूसरे पर चढ़ दौड़ते।" (सूरह मोमिनून: 91) "भला उसको उस पर कुदरत न होगी कि वह मुर्दों को फिर से ज़िन्दा कर दे।" (सूरह क़ियामह: 40) "कहता है कि कौन हड्डियों में जान डालेगा जबकि वह चूर्ण हो चुकी होंगी, कह दीजिए कि उनमें वही जान डालेगा जिसने पहली बार उनको बनाया।" (सूरह यासीन: 78–79)

3– विलोम शब्दों का वर्णन: आजकल शिक्षा का यह रूप चलन में है कि शब्दों के विलोम अर्थ बतलाए जाते हैं ताकि शब्द अपने विलोम के प्रकाश में पूरी तरह से स्पष्ट हो जाएं। इस रूप को नये रूपों में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्वीकार किया गया है विशेषतय: प्रार्थमिक शिक्षा में इसका बहुत ध्यान रखा जाता है। शिक्षा का यह रूप वास्तव में कुरआन करीम का दिया हुआ है। उसने सर्वप्रथम यह रूप आरम्भ किया कि बात को विलोम के द्वारा प्रस्तुत किया जाए ताकि बात इतनी स्पष्ट हो जाए कि किसी प्रकार के शक की गुंजाइश न रहे। अल्लाह तआला, झूठे उपासक, ईमान वाले, काफ़िर, जन्नत, दोज़ख़, सवाब, अज़ाब,

अच्छा, बुरा, कितने उदाहरण दिए जाएं। इससे पता चलता है कि अल्लाह तआला ने किस–किस अंदाज़ से इनसानों के सामने हिदायत को खोल कर रख दिया है।

4– आसान उदाहरणः मुश्किल बात को आसान उदाहरणों से समझाना शिक्षा का बहुत ही अच्छा रूप है। जो जितने स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करेगा वह उतना ही अच्छा शिक्षक घोषित किया जाएगा। अल्लाह की किताब ने इनसानों की हिदायत के लिए इस रूप को स्पष्टता व वर्णन के अनुसार ''नमूना'' घोषित किया है। "और हमने लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर प्रकार के उदाहरण बदल–बदल कर बयान कर दिये।" (सूरह इस्राः 89) एक और जगह यूं हैः "अल्लाह ऐसे ही मिसालें बयान फ़रमाता रहता है।" (सूरह रअदः 17) और कलिमा तैय्यबा के लिए अल्लाह ने पाक पेड़ की मिसाल बयान फ़रमायी हैः "क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह ने अच्छी बात की मिसाल एक अच्छे पेड़ से दी जिसकी जड़ मज़बूत है और जिसकी शाखें आसमान से बातें करती हैं।" (सूरह इब्राहीमः 24) यह सरल व्याख्या अपने अन्दर गूढ़ता के एक पूरे समन्दर को समोए हुए है।

5– उद्देश्यः क़ुरआन करीम की शिक्षा का एक अछूता रूप यह भी है कि बात के बीच में वास्तविक उद्देश्य की याद ताज़ा की जाती रहे। क़ुरआन करीम एक अत्यन्त व्यापक वाणी है। इसमें परलोक के साथ इस लोक के भी कार्य बताए गए हैं। लेकिन तुरन्त ही किसी न किसी संबंध से ध्यान परलोक की ओर मोड़ दिया जाता है ताकि मनुष्य यह वास्तविकता कभी न भूले कि वास्तविक मूल्य आख़िरत यानि परलोक का है और उसकी सफलता वास्तविक सफलता है। जैसेः एक जगह सूरह आराफ़ में लिबास का वर्णन है इसके तुरन्त बाद यह कहा गया है कि तक़्वे का लिबास सबसे बेहतर है। यानि सामान्य समस्याओं के तुरन्त बाद वास्तविकता की याद दिलायी गयी है। सूरह बक़रह में हज के सफ़र के लिए रास्ते के भोजन/पानी के प्रबन्ध की हिदायत है उसके फ़ौरन बाद यह टुकड़ा हैः "सबसे बेहतरीन ज़ादे सफ़र (यात्रा के दौरान की भोजन सामग्री) तक़्वा (ईश–भय) है" (सूरह बक़रहः 197) यानि भौतिक साम्रगी तो रहे ही, वास्तविक आत्मिक साम्रगी यानि तक़्वे को भी भुलाया न जाए। सूरह नहल में सवारी के जानवरों का वर्णन है फिर तुरन्त बाद यह कहा गयाः "सीधा रास्ता तो अल्लाह तक पहुंचना है।" (सूरह नहलः 9) मानो अल्लाह से पूरे तौर पर जोड़ा जा रहा है। यह क़ुरआन का अजीब व ग़रीब शैक्षिक रूप है कि कभी अपने उद्देश्य को न भूला जाए। शायद इसीलिए अल्लाह के कलाम में अल्लाह का नाम ढाई हज़ार से अधिक बार आया है। रब का वर्णन पांच सौ से अधिक बार हुआ है। रहमान व रहीम और दूसरी विशेषताओं का वर्णन सैंकड़ो बार आया है। क्या यह इस बात की घोषणा नहीं कि वास्तविक केन्द्र से कभी हटा न जाए। एक शिक्षक के लिए इसमें यह सबक़ है कि कभी अस्ल बुनियाद से हटकर दूसरी चीज़ों में समय नष्ट न किया करे।

6– एकाग्रताः किसी भी चीज़ को सीखने के दौरान दिमाग़, आंख और कान तीनों साधनों को जागरुक रखा जाए। इससे बात जल्दी समझ में आ जाती है और शिक्षा देना आसान हो जाता है। अल्लाह तआला इन साधनों का बनाने वाला है। उसी ने सबसे पहले इस बारे में चेताया था कि बात को समझने के लिए आंख, कान और दिल का पूरा–पूरा इस्तेमाल किया जाए। एक जगह क़ौमों के वाक़्यात और जन्नत व जहन्नम के सामूहिक वर्णन के बाद अल्लाह ने यह बात इरशाद फ़रमायीः "यक़ीनन इसमें नसीहत है उसके लिए जो दिल रखता हो या कान लगा दे और दिमाग़ हाज़िर रखे" (सूरह क़ाफ़ः 37) आयत के एक ही टुकड़े में शिक्षा के तीनों साधनों का एकसाथ प्रयोग हुआ है। इसीलिए जहां कहीं किसी पर ठप्पा लगाने की बात होती है तो इन ही तीनों साधनों का नाम लिया जाता है, जैसेः "अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर मुहर लगा दी है और उनकी आंखो पर पर्दा है।" (सूरह बक़रहः 8)

7– सत्य कथनः यह शिक्षा का निचोड़ है कि बयान का अंदाज़ चाहे जितना दिलकश हो लेकिन यदि बात सत्य नहीं है तो अन्दाज़ प्रभावित नहीं करता। अल्लाह तआला ने इनसानों को इसका पाठ पढ़ाया है कि बातों और घटनाओं को उसी प्रकार से बयान किया जाए जिस प्रकार वे हैं। बढ़ा–चढ़ा कर बयान करना झूठ का दूसरा नाम है। इससे शिक्षा का स्तर बहुत गिरता है। इरशाद हैः "यही (घटनाओं का) सच्चा बयान है" (सूरह आले इमरानः 62) असहाबे कहफ़ के किस्से का आरम्भ यूं होता हैः "हम ठीक–ठीक आपको उनका क़िस्सा सुनाते हैं" (सूरह कहफ़ः 13)

8– प्रमाणः शोध प्रमाण के बिना अविश्वस्नीय समझे जाते हैं। यह तरीक़ा भी अल्लाह के कलाम का दिया हुआ

है। यहूदियों से सम्बोधित होकर स्वयं अल्लाह ने यह बात कही: "आप कह दीजिए कि तौरात ले आओ और उसे पढ़ो अगर तुम सच्चे हो।" (सूरह आले इमरानः 93) या मुश्रिकीन से यह कहना: "इससे पहले कोई किताब हो या कोई इल्मी रिवायत हो तो मेरे पास लाओ अगर तुम (अपनी बात में) सच्चे हो।" (सूरह एहक़ाफ़: 4)

9– लाभ: शिक्षा का एक महत्वपूर्ण नियम यह है कि सीखने वाले के दिमाग़ में यह बात बिठाया जाए कि यह शिक्षा उसके लिए अत्यन्त लाभदायक है। फ़ायदा बताए बिना जो शिक्षा दी जाती है उसमें छात्र सही दिलचस्पी नहीं लेता। शिक्षा का यह मूलभूत नियम हमें अल्लाह की किताब ने दिया है। अल्लाह की किताब में जगह–जगह यह बात वर्णित है कि यह कुरआन सरासर इनसानों के फ़ायदे के लिए उतारा गया है। उसका कहना है: "बेशक यह कुरआन बहुत ही ठीक रास्ते की ओर मार्गदर्शन करता है और नेक काम करने वाले मोमिनो को बहुत बड़े बदले की ख़ुशख़बरी देता है।" (सूरह इस्राः 9) उसका यह भी कहना है: "यह कुरआन अक़्ल रखने वालों के लिए सरासर हिदायत व नसीहत है।" (सूरह ग़ाफ़िरः 54) एक जगह उसने अपनी पहचान यूं करवायी है: "ईमान वालों के लिए हिदायत व बशारत के तौर पर" (सूरह बक़रहः 98) एक जगह और "हिदायत व रहमत हैं अच्छे काम करने वालों के लिए" (सूरह लुक़मानः 3) के शब्द आएं हैं। एक और जगह पर अल्लाह ने साफ़–साफ़ यह बात बता दी है कि हमने इस किताब को लोगों के लिए यानि लोगों के फ़ायदे के लिए उतारा है। इरशाद है, "हमने आप पर यह किताब तमाम लोगों के फ़ायदे के लिए ठीक–ठीक उतारी है।" (सूरह ज़ुमरः 41)

10– इम्तिहानः शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग परीक्षा है। इसे बाद का तरीक़ा समझा जाता है। हालांकि ग़ौर किया जाए तो सबसे पहले अल्लाह की किताब ने इम्तिहान का विचार प्रस्तुत किया है। जबकि इसका संबंध प्रत्यक्ष रूप से शिक्षा से नहीं है। यद्यपि उसूली तौर पर अल्लाह की किताब ने यह मार्गदर्शक नियम बता दिया कि हमेशा पूरी जांच के बाद ही निर्णय लिया जाए। इस बारे में बहुत सी आयतें दी जा सकती हैं, नमूने के तौर पर एक मुबारक आयत प्रस्तुत है: "अलिफ़ लाम मीम, क्या लोगों ने यह ख़्याल कर रखा है कि सिर्फ़ हम ईमान लाए कह देने से उनको ऐसे ही छोड़ दिया जाएगा (और उनका ईमान कुबूल किया जाएगा) और उनको आज़माया नहीं जाएगा? वास्तव में हमने उनसे पहले गुज़रे हुए लोगों को आज़माया है, तो अल्लाह ख़ूब अच्छी तरह जान लेगा कि कौन सच्चे हैं और यह भी मालूम करेगा कि कौन झूठे हैं।" (सूरह अनकबूतः 1–3) निसंदेह आयत में एक दूसरे मामले में परीक्षा का वर्णन कर रही है, लेकिन इससे यह नियम पता चला कि जब तक जांच न हो उस समय तक प्रमाण न दिया जाए और परीक्षा भी ऐसी हो कि जिससे संभव सीमा तक वास्तविकता स्पष्ट हो जाए।

11– वक़्त की पाबन्दी: समय का अनुपालन शिक्षा का एक महत्वपूर्ण भाग है। इस मामले में भी अल्लाह के कलाम को वरीयता प्राप्त है। अल्लाह के कलाम ने जगह–जगह विभिन्न पहलुओं से समय के मूल्य का एहसास दिलाया है। अल्लाह तआला ने इस्लाम के सभी कामों को समय के साथ जोड़ा है। समय बीत जाने के बाद फिर बड़ी से बड़ी इबादत भी अल्लाह के यहां स्वीकृत नहीं हो पाती। फ़िरऔन की घटना इस बारे में आंखों को खोलने के लिए पर्याप्त है। उसने पूरे तौर पर इस्लाम कुबूल कर लिया था लेकिन समय बीत जाने के बाद। इसलिए वक़्त ही का हवाला देकर उसके ईमान को स्वीकार नहीं किया गया। फिरऔन के ऐलान के जवाब में यह बात इरशाद फ़रमायी गयी: "क्या अब?? (ईमान ला रहा है!) जबकि तू पहले ही नाफ़रमान चला आ रहा है और तू तो बहुत बड़ा मुफ़सिद था।" (सूरह नम्लः 64)

कुरआन के शैक्षिक रूप के संबंध से यह कुछ झलकियां प्रस्तुत की गयीं। वरना यह बात हर छात्र जानता है कि अल्लाह का महान कलाम हर प्रकार के नये व पुराने शैक्षिक रूपों से श्रेष्ठ है। हर युग में उससे मूलभूत नियम लिए जाते रहे हैं और आगे लिए जाते रहेंगे। इसका आसमान इतना बड़ा है कि सम्पूर्ण मानवता उसकी छांव में राहत का जीवन व्यतीत कर सकती है। इसका समन्दर कभी समाप्त होने वाला नहीं। इसके समन्दर से अनगिनत गौहर निकलते रहेंगे और अल्लाह के बन्दे मालामाल होते रहेंगे। उसके कारनामे असीमित, उसकी ताज़गी पुरानेपन से अपरिचित, उसकी हरियाली कभी मुरझा नहीं सकती, दुनिया की हर बहार के लिए उजाड़ मुक़द्दर, लेकिन कुरआन की बहार हर उजाड़ के लिए बहार का निमन्त्रण, वह कैसे उजाड़ से परिचित हो सकती है।

तिलावत-ए-कुरआन

के कुछ नमूने

हज़रत आयशा (रज़ि0) से रिवायत है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि0) बहुत ही कोमल हृदय के थे। कुरआन पढ़ते समय आंखों पर क़ाबू न रख सकते और स्वतः ही आंखों से आंसू जारी हो जाते।

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि0) से रिवायत है कि हज़रत उमर (रज़ि0) पर सुबह की नमाज़ में एक बार रोना तारी हुआ कि मैंने उनकी हिचकियों की आवाज़ तीन सफ़ों के पीछे सुनी।

हज़रत हसन बसरी (रह0) से रिवायत है कि हज़रत उमर (रज़ि0) अपने रात के विद्र में कभी–कभी कोई आयत पढ़ते तो इतना रोते कि गिर जाते और आपको घर में इतना ठहरना पड़ता कि लोग हाल–चाल लेने आते।

मुहम्मद इब्ने सीरीन कहते हैं कि हज़रत उस्मान (रज़ि0) पूरी रात एक रकआत में गुज़ार देते थे, जिसमें पूरा कुरआन शरीफ़ पढ़ लेते थे।

इब्ने उमैर (रह0) कहते हैं कि मुझे सूरह यूसुफ़ उस्मान (रज़ि0) के पीछे नमाज़ पढ़ने से याद हो गयी क्योंकि वे ज़्यादातर फ़ज्र की नमाज़ में यह सूरह पढ़ते थे।

हज़रत अली (रज़ि0) वो रसूलुल्लाह (स0अ0) की वफ़ात के बाद कुरआन शरीफ़ के हिफ़्ज़ का इतना इन्हमाक हुआ कि कई दिनों तक घर से न निकले।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस, अब्दुल्लाह बिन उमर, अब्दुल्लाह बिन रवाहा, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि0) जैसे सहाबा किराम, ताबईन सईद बिन जबीर, मालिक बिन अनस, मन्सूर इब्नुल मुअतमर (रह0) के बारे में रक़्त व खुशूअ और रोने धोने की ऐसी ही रिवायत हदीस व इतिहास की किताब में आयी हुई है।

खुलैद (रह0) नमाज़ पढ़ रहे थे। जब उन्होंने आयत "कुल्लू नफ़सिन ज़ायक़तुल मौत" पढ़ी तो बार–बार उसको दोहराते रहे। किसी ने घर के एक कोने से आवाज़ दी कि कहां तक इस आयत को दोहराते रहोगे, न मालूम कितनों के जिगर शक हो गए।

हज़रत हसन बसरी (रह0) ने एक पूरी रात एक आयत को बार–बार दोहराने में गुज़ार दी और सुबह हो गयी। लोगों ने इसका कारण पूछा तो बताया कि इसमें बड़ी इबरत है। हम जब भी नज़र उठाकर देखते हैं तो अल्लाह की किसी न किसी नेमत का अवतरण होता है और जो हम नहीं जानते वह उससे भी ज़्यादा है।

हज़रत मौलाना फ़ज़लुर्रहमान गंज मुरादाबादी (रह0) एक रोज़ कुरआन की तिलावत कर रहे थे कि आप पर कैफ़ियत तारी हुई। मौलवी सैय्यद तजम्मुल हुसैन साहब से फ़रमाया कि जो मज़ा हमको कुरआन में आता है अगर तुमको वह मज़ा ज़र्रा बराबर भी आए तो हमारी तरह न बैठ सको, कपड़े फ़ाड़कर जंगल निकल जाओ, आप ने आह की और बैठक में तश्रीफ़ ले गए और कई दिन तक बीमार रहे।

आठवीं सदी के मशहूर बुज़ुर्ग सुल्तान ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया (मृत्युः 725 हिजरी) को कुरआन मजीद का ख़ास ज़ौक़ था। उसके हिफ़्ज़ के एहतिमाम और तिलावत की कसरत का आदेश देते थे। अमीर हसन अला संजरी जब हज़रत ख़्वाजा से जुड़े तो वे बूढ़े थे और जीवन भर शेर व शायरी की थी। हज़रत ख़्वाजा ने उनको ताकीद की कि कुरआनी ज़ौक़ को शेर व शायरी के ज़ौक़ पर ग़ालिब करें। अमीर हसन लिखते हैं कि, "बार–बार उनकी मुबारक ज़बान से मैंने यह शब्द सुने हैं कि चाहिए कि कुरआन मजीद का पढ़ना शेर कहने पर ग़ालिब आ जाए।"

पश्चिम की इस्लाम दुश्मनी

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

सलीबी जंगों (मुसलमान–ईसाई युद्ध) में लगातार पराजय के बाद ईसाईयों ने अपनी रणनीति में बदलाव किया। तीर व तलवार के बजाए उसने वैचारिक और सांस्कृतिक युद्ध की तैयारी शुरू कर दी। इस क्रम में ईसाईयों ने मुसलमानों से ही मार्गदर्शन प्राप्त किया। सलीबी युद्ध के कारण उन्हें मुसलमानों को क़रीब से देखने और समझने का अवसर प्राप्त हुआ और वे उनके कमज़ोर पहलुओं से पूर्ण रूप से परिचित हो गए। अतः उन्होंने मुसलमानों को वैचारिक रूप से खोखला और उनके चरित्र व आचरण को पथभ्रष्ट करने की जो पॉलिसी अपनायी उसमें उनको बहुत हद तक सफलता प्राप्त हुई। मुसलमानों की अधिकांश आबादी पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित हुई। उनके सोचने का ढ़ंग, रहन–सहन का अंदाज़, उनकी चाल–ढाल सब पर पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव पड़े। चारित्रिक व वैचारिक दृष्टिकोण से मुसलमानों ने यूरोप की गुलामी स्वीकार कर ली और यूरोप की यही सफलता उसके उत्थान व मुसलमानों के पतन का आरम्भिक बिन्दु घोषित की गयी।

मुसलमानों पर वैचारिक व सांस्कृतिक हमले के लिए पश्चिम ने मुसलमानों में ही से व्यक्तियों को तैयार किया, और यह वास्तविकता है कि किसी समुदाय या क़ौम की सोच को बदलने के लिए बाहर की तुलना में आन्तरिक तत्व अधिक प्रभावपूर्ण सिद्ध होते हैं। अतः उच्च शिक्षा के नाम पर मुस्लिम नवजवानों को यूरोप की यूनिवर्सिटियों में ले जाया गया जहां उनके ज़हन को तैयार किया गया। उनको पाश्चात्य सांचे में ढाला गया और फिर पश्चिमी शिक्षा की चक्की में पिस कर ऐसी नई नस्ल तैयार हुई जिनके नाम तो मुसलमानों के जैसे थे लेकिन उनके दिलों में इस्लाम की कोई हक़ीक़त न थी। अतः उन्होंने रहन–सहन का पाश्चात्य रूप अपनाने की दावत दी। इसी के आइने में इस्लामी संदेश को समझने की और उसमें बदलाव की ज़ोरदार वकालत की और जानबूझकर या अनजाने में मुस्लिम देशों में पाश्चात्य संस्कृति की जड़ों को मज़बूत करने की भरपूर कोशिश की। उन लोगों ने विशेषतयः मुस्लिम नवजवानों पर गहरे प्रभाव छोड़े और पूरी की पूरी नस्ल उनकी ताल में ताल मिलाने लगी।

उलमा (इस्लामिक स्कॉलर) ने पश्चिम के इस वैचारिक व सांस्कृतिक आक्रमण का डट कर मुक़ाबला किया। उसके फैलते हुए ज़हरीले असर को बहुत हद तक कम भी कर दिया फिर भी उसकी जड़े मुस्लिम समाज में इतनी गहरी और मज़बूत हो चुकी थीं कि वे बहुत से जगह से कमज़ोर और खोखली अवश्य हुईं किन्तु उखड़ न सकीं और मुसलमानों की बहुत सी वे योग्यताएं उसमें नष्ट हुईं जो पूरे समुदाय व संसार के हक़ में लाभदायक हो सकती थीं।

प्राच्यविद्या का यह सिलसिला जो सलीबी युद्ध के बाद आरम्भ हुआ था वह अब भी स्थापित है। यद्यपि उसका स्वरूप भिन्न है और उसी का नतीजा है कि आज मुसलमानों में बहुत से वर्ग स्थापित हो चुके हैं। जो अपनी समझ के अनुसार दीन की व्याख्या करते हैं और अब इसी अनुसार अमरीका व यूरोप में पॉलिसियां बनायी जाती हैं। इसीलिए विख्यात अमरीकी संस्था "रेंड कार्पोरेशन" की एक रिपोर्ट (Civil Democratic Islam) में मुस्लिम बुद्धिजीवियों के चार वर्गों का नक़्शा प्रस्तुत किया गया है:

1– आधुनिकतावादी (Modernists): यानि वे मुसलमान जो पश्चिम की हर प्रिय चीज़ के बारे में यह कहने वाले हैं कि यही इस्लाम के अनुसार है, यानि ऐसा इस्लामी एडिशन जो पश्चिमी सभ्यता के साथ मिला हुआ हो।

2– धर्मनिरपेक्षतावादी (Secularist) वे मुसलमान जो दीन और दुनिया में अन्तर करते हैं। यानि इस्लाम धर्म का सांसारिक कार्यों में कोई हस्तक्षेप नहीं। उसका कार्यक्षेत्र अलग है।

3– परम्परावादी (Traditionalist) यह वह वर्ग है जो संकीर्ण बुद्धि का है और यह समझता है कि राज्य और सत्ता का दीन से कोई लेना–देना नहीं।

4– रूढ़िवादी (Fundamentalist) मुसलमानों का वह वर्ग जो इस्लामी साम्राज्य की स्थापना और कुरआन व सुन्नत पर आधारित इस्लामी नियमों को लागू करना चाहता है।

इस अन्तिम वर्ग से यूरोप व अमरीका भयभीत हैं। उनके अस्ल दुश्मन यही मुसलमान हैं। इसी लिए "आतंकवाद" और "कट्टरता" और उन जैसे विषयों के द्वारा इस वर्ग को बदनाम करने का प्रयास किया जाता है और दूसरे वर्गों को इसके विरुद्ध खड़ा किया जाता है ताकि उनका कोई वज़न न क़ायम हो सके। आपस की लड़ाई में उनकी सारी शक्तियां बेकार हो जाएं और दुनिया के मंज़रनामें में उन्हें कोई महत्वपूर्ण स्थान न प्राप्त हो सके।

हम्द व शुक्र

ज़बान के लिए बड़े गर्व की बात है कि वह हम्द व शुक्र (अल्लाह की प्रशंसा एवं अल्लाह का शुक्र) के शब्दों से तर रहे। यूं भी यह बड़ी एहसान फ़रामोशी है कि एहसान करने वाले का धन्यवाद न दिया जाए और उसकी प्रशंसा न की जाए। अल्लाह तबारक व तआला ने हम पर, आप पर अनगिनत एहसान किए हैं और हर समय उसकी नेमतों से हम लोग फ़ायदा उठाते रहते हैं। दाना, पानी, हवा रोशनी, सेहत व सुकून, शांति व सलामती और उनके जैसे बहुत से उपकार हैं जो अल्लाह ने हमको, आपको दे रखें हैं, जिनका कोई बदल नहीं है। उनमें से यदि कोई नेमत हमसे छीन ली जाए, तो ज़िन्दगी गुज़ारना मुश्किल हो जाए। लेकिन इनसान की फ़ितरत नाशुक्री और एहसान फ़रामोशी की ओर अधिक झुकाव रखती है।

कुरआन में फ़रमाया गया है:

"और जब हम इनसान पर ईनाम करते हैं तो वह ऐराज़ करता है और अकड़ता है और जब उसको कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो वह मायूसी का शिकार हो जाता है।"

कुरआन शरीफ़ में हम्द व शुक्र का वर्णन:

अल्लाह तआला ने अपने सारे बन्दों को एहसान मानने व प्रशंसा करने की शिक्षा दी है। सूरह फ़ातिहा जो नमाज़ की हर रकआत में पढ़ी जाती है और कुरआन शरीफ़ की सबसे पहली सूरह है उसकी शुरूआत भी हम्द से की गयी है:

"सब तारीफ़ है अल्लाह की जो सारे जहानों का पालने वाला है।"

फिर जगह–जगह अल्लाह ने अपने एहसान की निशानदेही की है और प्रशंसा व शुक्र के शब्दों से अपने बन्दों को परिचित कराया है। पूरे कुरआन मजीद में अलग–अलग रूप से प्रशंसा के शब्द आए हैं। कहीं ख़ुद तारीफ़ की है और कहीं उन नेक लोगों का वर्णन किया है जिनकी ज़बान अल्लाह की तारीफ़ से तर रहती हैं। कहीं हम्द व शुक्र की शिक्षा दी है।

हम्द व शुक्र का आदेश

अल्लाह तआला अपने बन्दों का ध्यानाकर्षित करके कहता है:

"बस तुम लोग मुझे याद करो, मैं तुमको याद रखूंगा, और मेरा शुक्र करो और नाशुक्री मत करो।"

दूसरी जगह शुक्र करने के ईनाम का इस प्रकार वर्णन किया गया है:

"अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुमको और ज़्यादा नेमतें अदा करूंगा।"

हज़रत लुकमान अलै० को अल्लाह तआला ने ज्ञान व तत्वदर्शिता दी थी तो आभार प्रकट करने का आदेश भी दिया था।

"और हमने लुक़मान को बुद्धिमता प्रदान की कि अल्लाह का शुक्र करते रहो, और जो शुक्र करेगा वह अपने व्यक्तिगत लाभ हेतु करता है और जो नाशुक्री करेगा तो अल्लाह बेनियाज़ ख़ूबियों वाला है।"

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

ISSUE:02 FEBRUARY 2016 VOLUME: 08

CONTACT: 9919331295

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9792646858
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.